खंड : XV अंक : 5 व 6

मई - जून, 2003

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

चैतन्य लहरी

इस अंक में

1 गणेश पूजा – 18 सितंबर, 2002 (कबैला)

13 क्रिसमस पूजा – 25 दिसंबर, 2002 (गणपति पुले)

21 नववर्ष पूजा – 31 दिसंबर, 2002 (वैतरणा)

25 किंग्स्टन में पूजा – 11 जून, 1980

39 जन्म दिवस समारोह – 21 मार्च, 2003 (दिल्ली)

45 मकर संक्रांति संदेश

46 प्रेमपूर्वक–एस्टोनिया से

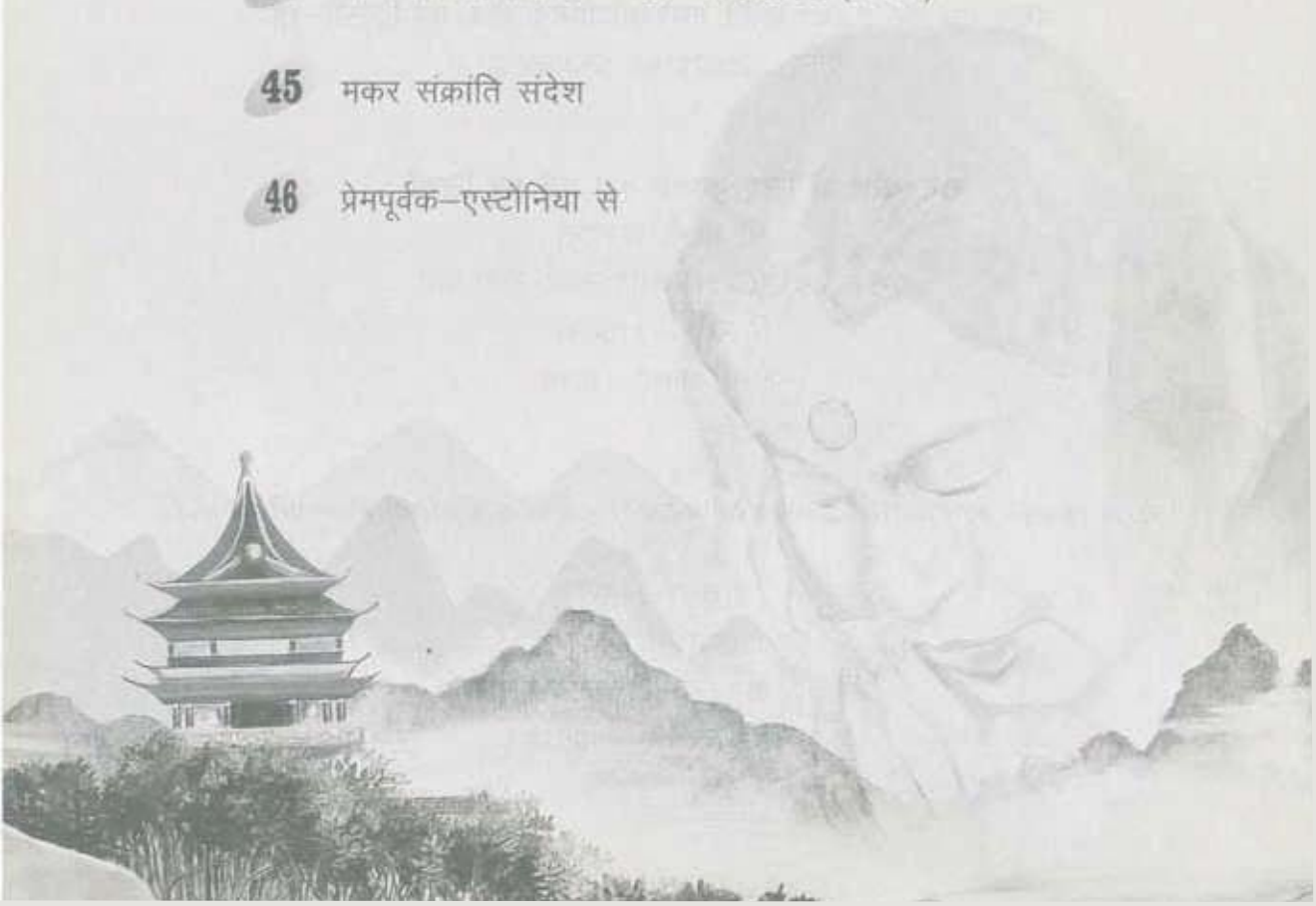

चै त न्य ल ह री

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू एच एस 2/47 कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–15
फोन : 25921159, 55458062

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :–
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 (G-11) ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110034
फोन : 9810414910

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी–17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

श्री गणेश पूजा

कबैला – 18 सितंबर, 2002

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहाँ श्री गणेश की पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं। श्री गणेश पावित्र्य के देवता हैं। बालक रूप में जब हम जन्म लेते हैं तो श्री गणेश कार्यरत होते हैं। हम अत्यन्त अबोध होते हैं। परन्तु अबोधिता इतना शक्तिशाली गुण है कि बच्चे हर हाल में जिन्दा रहते हैं, और हम उन्हें प्रेम करते हैं क्योंकि वे अबोध हैं। इसी अबोधिता के कारण हम उनका आनन्द लेते हैं। ज्यों–ज्यों आयु बढ़ती है हमारा सहस्रार बन्द होता चला जाता है और सभी प्रकार के अटपटे विचार इस में प्रवेश कर जाते हैं और निकलते ही नहीं, वहाँ बने ही रहते हैं निकलने का नाम ही नहीं लेते। हमारे चरित्र पर तथा हमारे कौमार्य–विवेक पर भी अबोधिता का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। व्यक्ति यदि अबोध नहीं है तो उसे पवित्रता का ज्ञान नहीं होता कि अपवित्र होना कैसा है, चालाक होना कैसा है। अबोध व्यक्ति को यदि कोई हानि पहुँचाने का प्रयत्न करे तो श्री गणेश उसकी रक्षा करते हैं, उसकी देखभाल करते हैं। विश्व के बहुत से अबोध लोग, यद्यपि ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है, कामुकता, लोभ तथा अन्य बहुत सी सांसारिक समस्याओं से निर्लिप्त हो जाते हैं क्योंकि वे इतने पावन होते हैं कि कोई भी चीज न उन्हें बिगाड़ सकती है और न ही उनका अनिष्ट कर सकती है। हम पर बहुत बड़ा आर्शीवाद है कि हमारे अन्दर पावित्र्य का सृजन किया गया है। किसी भी अन्य सृजन से पहले पावित्र्य की स्थापना की गई। अबोध बन जाना हमारा बहुत बड़ा गुण है।

आनन्द श्री गणेश का महानतम गुण है। बाल्यकाल में यह आपको आनन्द प्रदान करते हैं। बच्चे यद्यपि बोलते नहीं है फिर भी बेशुमार आनन्द प्रदान करते हैं। आनन्द प्रदान करने का यह गुण श्री गणेश से आता है।

सहजयोग में आने के बाद भी मैंने देखा है कि, लोग आनन्दित नहीं होते, अब भी वे गम्भीर होते हैं। वो नहीं जानते कि किस प्रकार हँसना है, किस प्रकार हर चीज़ का आनन्द लेना है। यह इस बात को दर्शाता है कि उनमें अबोधिता का अभाव है। अतः यह बात समझ लेनी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि यदि आप सहजयोगी हैं तो आपको आनन्दित रहना चाहिए तथा बच्चों की तरह अन्य लोगों को भी आनन्द प्रदान करना चाहिए – बच्चे कितने मधुर होते हैं! चाहे नवजात शिशु ही क्यों न हों फिर भी वे कितनां आनन्द प्रदान करते हैं! आपमें यदि बच्चों की अबोधिता का आनन्द लेने की योग्यता नहीं है तो कोई आपकी सहायता

नहीं कर सकता। श्रीगणेश भी आपकी सहायता नहीं कर सकते क्योंकि मानव के अन्दर एक अन्तर्जात गुण है और आपमें यदि वह गुण नहीं है तो अन्य गुणों का कोई लाभ नहीं। कुछ लोगों को भोजन बहुत अच्छा लगता है, कुछ रंग पसन्द करते हैं, कुछ और बहुत सी चीज़ें पसन्द करते हैं। आपमें यदि श्री गणेश (अबोधिता) नहीं हैं तो आप किसी भी चीज़ का आनन्द नहीं ले सकते। श्रीगणेश के आशीर्वाद से ही हम वास्तव में हर चीज़ का पूर्ण आनन्द ले सकते हैं। इसके बिना तो हम चीज़ों को आंकने लगते हैं, आलोचना करने लगते है। हर चीज़ के विषय में लोग बहुत से प्रश्न खड़े कर देते हैं। किसी चीज़ को यदि आप देखते हैं और वह यदि आपको आनन्द प्रदान करती है तो आशा की जाती है कि आप उसका कारण बताएं। इस विश्व में बहुत से आलोचक हैं जो एक दूसरे की आलोचना ही करते रहते हैं। अब आलोचक आलोचकों की ही आलोचना करते हैं। यह बहुत बड़ी समस्या है। उनका यही कार्य है क्योंकि उनमें गणेश तत्व का अभाव है। वे अन्य लोगों की ही आलोचना करते रहते हैं, अपनी कभी भी नहीं करते। उन्हें अपनी कभी कोई सीमा नज़र नहीं आती और इस प्रकार से ऐसे समाज की सृष्टि करते हैं, जो बहुत ही हानिकारक, भयानक होता है। ऐसे लोग शरीर पर फोड़े–सम या शरीर के अन्दर मवाद–सम होते हैं। आप यदि किसी चीज की सराहना नहीं कर सकते, किसी चीज का आनन्द नहीं ले सकते तो आपके अन्दर श्री गणेश का पूर्ण अभाव है। व्यक्ति में हर चीज का आनन्द लेने की योग्यता होनी चाहिए। अपने तथा लोगों के बच्चों का आनन्द लेने की योग्यता होनी चाहिए। यही चीज दर्शाती है कि उसे श्री गणेश का आशीर्वाद प्राप्त है।

श्री गणेश का सौन्दर्य यह है कि वे आपकी कुण्डलिनी की देखभाल करते हैं, उसकी देखभाल करते हैं तथा सभी चक्रों पर उन्हीं को आशीर्वाद देना होता है। **श्रीगणेश के आशीर्वाद के बिना सहजयोगी के रूप में आप बिल्कुल व्यर्थ हैं क्योंकि तब आप हर समय केवल अन्य लोगों की बुराइयां देखते हैं और हर समय उलझे रहते हैं।** मैं कहना चाहूंगी कि इस स्थिति में आप ऐसी समस्या में फंस जाते हैं, जिसके कारण किसी चीज का आनन्द नहीं ले पाते। स्वभाव से ही आप सोचते हैं कि आप बहुत गम्भीर, परिपक्व और अनंत हैं। परन्तु आप अबोध नहीं हैं। ऐसा व्यक्ति हमेशा सभी के लिए सिरदर्द बन जाता है। परिवार में यदि एक भी व्यक्ति ऐसा हो तो लोग उससे छुटकारा पाना चाहते हैं।

अतः आपमें श्रीगणेश का गुण होना चाहिए और ये गुण है दूसरों को आनन्द प्रदान करना। आप कितना आनन्द अन्य लोगों को दे सकते हैं? ऐसा व्यक्ति अपने लिए कुछ नहीं चाहता, कभी भी नहीं कहता कि मुझे ये मिलना चाहिए, मुझे वो मिलना चाहिए, मुझे लीडर होना चाहिए। ये होना चाहिए वो होना चाहिए। वो तो बस दूसरों

को आनन्द देने में ही मजा लेता है। दूसरों को आनन्द देने में–विनोदशील एवम् करुणामय बनकर दूसरों को आनन्द देने में। वो कभी दूसरों का अपमान करने या दिल दुखाने का प्रयत्न नहीं करता। गलती से भी यदि वो कभी दूसरों का दिल दुखा दे तो उसे इसका बहुत पछतावा होता है और सौ बार दूसरों से क्षमा मांगता है। ऐसा प्रसन्नचित्त व्यक्ति ही सच्चा सहजयोगी होता है। हमें भी अपने चहुं ओर ऐसे ही व्यक्ति चाहिएं–जिनमें किसी के लिए घृणा और ईष्या न हो, जो दूसरों की बुराइयां न खोजें, सभी की अच्छाइयां देखें, सभी के गुण देखें। ये न देखें कि आपकी त्वचा का रंग कैसा है, आप गोरे हैं, काले हैं, लम्बे हैं, ठिगने हैं–इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि यह तो पूर्ण–पूर्ण आनन्द है और इस पूर्ण आनन्द की अवस्था में आप किसी की आलोचना नहीं करते और न ही किसी में बुराइयां खोजते हैं।

समस्या यह है कि इस आधुनिक युग में लोग अत्यन्त–अत्यन्त आधुनिक हो जाते हैं और अन्य लोगों की आलोचना करने में भी वह बहुत आगे हैं। यही पारस्परिक सम्बन्ध उन्होंने बनाए हैं कि वे एक दूसरे की आलोचना ही करते रहते हैं।

एक अन्य दुर्गुण भी उनमें है कि वे अपने देश के लोगों से ही मेल–जोल करते हैं, अपने परिवार तक ही सीमित रहते हैं। मैंने देखा है कि इससे समस्याएं भी खड़ी होती हैं, जिन धर्मों को हम मानते हैं उन्हीं से जुड़े रहते हैं। जब आप एक और दूसरे में अन्तर करने लगते हैं तो कितनी समस्याएं खड़ी हो सकती हैं? उदाहरण के रूप में एक व्यक्ति एक स्थान पर जन्मा है, उस स्थान के कारण वह अपने को सर्वोत्तम समझता है, अपने देश को, अपने लोगों को ही सर्वोत्तम समझता है और सोचता है कि उनमें कोई कमी नहीं है। इसके विपरीत व्यक्ति यदि सच्चा सहजयोगी है, जिसमें श्रीगणेश जागृत हैं तो वह व्यक्ति सभी कुछ देखता है, इसके पीछे छुपे हुए विनोद का आनन्द लेता है। सभी लोगों की कमियों को देखता है कि वो किस चीज के पीछे पागल हैं। किस प्रकार वो आचरण करते हैं तथा उनके व्यवहार के पीछे छुपे मजाक को समझता है और उसका आनन्द लेता है। उनकी मूर्खता यह होती है कि वह संच्चाई से बचते हैं और सच्चाई को तभी देखा जा सकता है जब आप सच्चाई के साम्राज्य में हों, अन्यथा हर समय आपको कमियां ही नजर आती हैं। कोई न कोई हिलाने वाली और परेशान करने वाली चीज नजर आती है। परन्तु हर चीज के पीछे छुपे विनोद को यदि आप देख सकते हैं, केवल तभी आप ठीक हैं। उदाहरण के रूप में मैं कहूँगी कि मुझे ऐसे अनुभव हुए जब लोगों ने आकर मुझे कहा कि फलां व्यक्ति ऐसा है फंला व्यक्ति वैसा है, तो मैं सीधे उससे पूछती हूँ कि 'क्या आप वास्तव में ऐसे हैं?' उत्तर मिलता है कि 'नहीं मैं ऐसा नहीं हूँ?' मैं कहती हूँ तो क्यों अन्य लोगों को आपमें यह कमी नजर आती है? हो सकता है सभी लोग गलती कर रहे हों या आप गलत हों। तब वो कहता है कि हो सकता है मुझमें ही

कुछ कमी हो। इस प्रकार से आप व्यक्ति को परिवर्तित कर सकते हैं तथा उनको भी जो ये सोचते हैं कि वही ठीक हैं, बाकी का सारा संसार बुरा है तथा उनसे घृणा करने का उन्हें अधिकार है और वो विपरीत दिशा में भी चल सकते हैं। ऐसे में होता क्या है कि व्यक्ति आनन्द का सार खो देता है।

आनन्द का तत्व या सार तो सभी चीजों में आनन्द का स्रोत खोजने में हैं। मान लो आप किसी अटपटी चीज को देखते हैं तो इसमें भी आपको विनोद का आभास होना चाहिए। यदि यह सुन्दर है तो इसको समझने में आपको दूसरे प्रकार की संवेदना होनी चाहिए। कुछ लोग अपने और दूसरों के जीवन में अर्थहीन चीज़ों का ही राग अलापते रहते हैं। यह बात मेरी समझ में नहीं आती। मेरे पिताजी में यह सब करने की गहन क्षमता थी। एक बार जब मैं घर गई तो मैंने कहा कि मेरा भाई उस संगीतज्ञ की प्रशंसा कर रहा था। आपका उसके विषय में क्या विचार है? उन्होंने कहा निःसन्देह वह संगीतज्ञ है। उसमें साहस बहुत है। मैंने कहा, 'क्यों?' क्योंकि वो जो चाहे गाता चला जाता है, उसे कुछ बुरा नहीं लगता। चाहे सभी लोग हंसते रहें, उकता जाएं, परन्तु उसे इसकी बिल्कुल चिन्ता नहीं होती। अपनी शैली में ही वो गाता चला जाता है'। अतः लोगों की कमियों का आनन्द लेने में भी सौन्दर्य है। मैं कहना चाहूँगी कि यह भी एक अत्यन्त सूक्ष्म संवेदना है जिसके द्वारा व्यक्ति के दोषों का भी उन्हें विनोद मान कर आनन्द लिया जा सकता है। तथा उसकी खूबियों का भी आनन्द लिया जा सकता है, तो क्यों आप बिना बात के लोगों की आवाजें बंद करें, क्यों उनकी आलोचना करें।

अब ऐसे लोगों से इतनी बड़ी संस्था कैसे बनाई जाए, उदाहरण के रूप में कैथोलिक्स लोग प्रोटैस्टेन्टस का विरोध करेंगे और प्रोटैस्टेन्टस कैथोलिक लोगों का, क्योंकि वो तो एक दूसरे से घृणा करते हैं। इसका क्या लाभ है? एक दूसरे को घृणा करने का क्या लाभ है? केवल इस कारण की कोई प्रोटैस्टेन्टस है और कोई कैथोलिक? स्वयं देखें कि आपमें क्या कमी है, आप इस प्रकार से क्यों सोचते हैं, क्यों आप चीजों को देखकर कहते हैं कि फलां व्यक्ति में क्या कमी है, और फिर लड़ने के लिए झुंड बना कर परस्पर लड़ते हैं। इस प्रकार के विचारों से कि दूसरा व्यक्ति ठीक नहीं है और तुम स्वयं पूर्णतः ठीक हो, बड़े–बड़े युद्ध भी हो सकते हैं। राष्ट्रों के स्तर पर भी मैंने यह बात देखी है! यहां तक की सहजयोग में मैंने देखा है कि मान लो कोई व्यक्ति भारत से या किसी अन्य देश से आ रहा है तो उससे पूर्व अपना ही उम्मीदवार खड़ा कर दिया जाए। ये ऐसे लगाव हैं, जिनके विषय में लोग सचेत नहीं हैं। परन्तु ऐसी स्थिति में मैं अपनी माया फैलाती हूँ, और जब वे ऐसे कार्य करते हैं, जब वे किसी एक दल का, एक ही प्रकार के लोगों का, एक ही धर्म के लोगों का, पक्ष लेते हैं, धर्म न कहकर हम कहें कि एक ही देश का पक्ष लेते हैं तो मेरी माया कार्य करती है। अतः सहजयोग में भी

यह राष्ट्र–लगाव काफी है कि आप फलां देश से हैं और उसी का पक्ष लेते हैं। इस बात को आप नहीं समझते कि व्यक्ति चाहे जिस भी देश में हो वह सहजयोगी है।

हमारा समाज विश्व स्तरीय है। हमारी पहचान किसी एक देश से नहीं होनी चाहिए। हमारे लोगों की अन्तर्राष्ट्रीय पहचान होनी चाहिए। मुझे ऐसी चीज़ें देखने को मिली हैं और मुझे खेद होता है कि आपने सहजयोग के स्वभाव को नहीं समझा। सहजयोग विश्वस्तरीय है, पूर्णतः विश्वस्तरीय, किसी एक देश या किसी व्यक्ति विशेष से इसे कुछ नहीं लेना–देना। यह इतनी विश्वस्तरीय चीज है कि यदि आप इसके सूक्ष्म पक्ष को देखें तो जान जाएंगे कि यह कितना आनन्ददायी है। सर्वशक्तिमान परमात्मा ने केवल एक विश्व बनाया है। लोगों ने चाहे संयुक्त राष्ट्र संघ बनाया हो, उन्होंने चाहे ये सभी कुछ बना लिया हो फिर भी वे अपने ही देश से इतने जुड़े हुए हैं कि वे अपने देश को ही नहीं सुधार सकते। मान लो आपके अपने देश में कोई दोष है तो उसे भी वे नहीं सुधार सकते, उनकी दृष्टि में सभी कुछ ठीक है क्योंकि उनका जन्म उस देश विशेष में हुआ। किसी देश को यदि वो अच्छा मानते हैं तो उस सीमा तक उसकी प्रंशसा किए चले जाते हैं कि वे स्वयं भी नष्ट हो जाते हैं और उनकी धारणा भी। अतः किसी देश–विशेष का पक्ष–धर होने के पीछे निहित, मजाक को देखना ही सर्वोत्तम है। इसके विषय में एक बहुत अच्छा चुटकुला है। सहजयोगियों में मैं भी इसका आनन्द लेती हूँ।

मैंने देखा है कि किसी देश विशेष का पक्षधर बन जाना एक आम बात है। आप किसी देश से यदि जुड़े हुए हैं तो आपको चाहिए कि आप उसको सुधारें।उस विचारधारा को सुधारें जिसका वे अनुसरण करते हैं। इन सारी चीज़ों पर उनकी दृष्टि नहीं पड़ती क्योंकि वे इस प्रकार से उनसे जुड़े हुए हैं कि उन्हें उनके दोष नज़र ही नहीं आते। वो ये देखते हैं कि अन्य लोगों में क्या दोष हैं। परन्तु मैंने देखा है कि सच्चे सहजयोगी बहुत अच्छे हैं। वे मुझे बताते हैं कि उनके देश में क्या दोष हैं और वहां पर क्या हो रहा है, क्या कठिनाइयां है और वहां के लोग कैसे हैं। ये कितनी आश्चर्यजनक बात है! मैं हैरान थी कि किस प्रकार से लोगों ने मुझे बताया कि कौन से लोग एक रूप नहीं हैं और अत्यन्त सूक्ष्म रूप से सहजयोग–विरोधी हैं। मैं हैरान थी कि कैसे वे इस प्रकार से विरोधी हैं। उन्होंने बताया कि श्रीमाताजी किसी भी प्रकार से उनमें विश्वबंधुत्व नहीं है। एक बार जब आप विश्वस्तरीय हो जाते हैं तो आपकी भिन्न राज्यों संबंधी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। ये बात उनके मस्तिष्क में नहीं आती कि हम सहजयोगी हैं और हमें विश्वस्तरीय बनना है। हम सहजयोगी हैं। हमें किसी देश विशेष से लिप्त नहीं होना और यदि अब भी हम ऐसा करते हैं तो अभी तक हमारे विश्व स्तरीय व्यक्तित्व में कुछ कमी है।

ये सर्वबन्धुत्व व्यक्तित्व हमें श्री गणेश प्रदान करते हैं। उनका व्यक्तित्व सार्व–भौमिक है, सभी देशों के लिए है चाहे वह इटली हो या इंग्लैड। उनके व्यक्तित्व में

अबोधिता है, पूर्ण अबोधिता। केवल इतना ही नहीं वे आनन्द प्रदायक हैं। आनन्ददायी व्यक्ति को मान्यता मिलती है। ऐसा नहीं है कि विश्व उन्हें मान्यता नहीं देता। वो संभवतः न जानते हों कि वो सार्वभौमिक हैं। परन्तु सार्वभौमिक लोग विश्व स्तरीय घटनाओं और आवश्यकताओं पर पुस्तकें लिखते हैं, अपने देश के लोगों की आलोचना कर सकते हैं, अपने समुदाय के लोगों की आलोचना कर सकते हैं और इसी तरह से चलते जाते हैं। परन्तु कई बार ऐसे लोग किसी अन्य समुदाय के दास भी हो सकते हैं और उसकी प्रशंसा करने का प्रयत्न भी कर सकते हैं। अतः आपको दास नहीं होना है। किसी एक देश से लिप्त नहीं होना है।

आपको आत्मरूप होना है और जिस चीज का आनन्द आत्मा लेती है उसकी अभिव्यक्ति करनी है। यह इस बात का चिन्ह है कि आपके श्री गणेश विद्यमान हैं और वही कार्यान्वित कर रहे हैं। अगुवाओं के लिए यह बात समझना बहुत आवश्यक है क्योंकि मैंने देखा है कि किस प्रकार से वे अपने देश–वासियों से ही लिप्त होते हैं! कभी–कभी मुझे यह देखकर अत्यन्त खेद होता है। मुझे वास्तव में दुख होता है कि किस प्रकार वे ऐसे हो सकते हैं! वो अब किसी देश विशेष के नहीं है। अब तो वे श्रीगणेश के देश के हैं जो प्रेम और आनन्द का साम्राज्य है। व्यक्ति यदि प्रेम एवम् आनन्द प्रदान नहीं कर सकता तो निश्चित रूप से उसमें कुछ कमी है।

श्रीगणेश के इसी गुण से लोग पावन हो जाते हैं क्योंकि पावनता अत्यन्त आनन्ददायी चीज है। अत्यन्त आनन्दायी। यह ऐसी चीज नहीं है, जिसके विषय में आपको किसी को बताना पड़े या यह किसी पर लादनी पड़े या किसी को नियन्त्रित करना पड़े। यह तो आनन्द लेने की चीज है, अपनी आत्मा का आनन्द और अन्य लोगों की पावनता का आनन्द। श्रीगणेश का यह महान वरदान है, इतना महान वरदान कि आप अपनी पावनता का आनन्द लेते हैं। इस बात की चिन्ता नहीं करते कि दूसरा आदमी पावन है कि नहीं। कोई यदि गलत कार्य कर रहा है या भ्रष्ट है तो भी इसका प्रभाव आप पर नहीं पड़ता। उससे आप स्वयं बिगड़ते नहीं। आपके पास तो अपनी पावनता है और पावनता–पूर्ण क्षणों से भरा हुआ अपना जीवन। आजकल की आधुनिकशैली चरित्रहीन जीवन तथा पावनता के विषय में सभी प्रकार के गलत विचारों की ओर झुक गई है। आज यदि कोई व्यक्ति पावनता की बात करता है तो लोग सोचते हैं कि अवश्य ही वह पागल है। ऐसा कैसे हो सकता है? आजकल सभी कुछ हो रहा है। आप यदि देखें तो भिन्न प्रकार के फैशन हैं। कोई भी फैशन शुरु होता है तो फैलता ही चला जाता है। सभी लोग उसी फैशन के वस्त्र पहनते चले जाएगें। उनमें अपना कोई व्यक्तित्व है ही नहीं। कोई भी गलत कार्य चालू होता है तो विशेष रूप से महिलाएं उधर को ही चल पड़ती हैं। महिलाओं ने तो अपने पावनता विवेक को बिल्कुल ही खो दिया है। जिस

प्रकार से वे वस्त्र पहनती है उससे मुझे कई बार तो दुख पहुँचता है। ऐसी वेशभूषा पहनने का क्या लाभ है? क्यों नहीं आप ठीक से वस्त्र पहन सकते? यह चीज दर्शाती है कि उनका अपना कोई चरित्र नहीं है। वो चाहे कहते रहें कि मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ परन्तु वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है क्योंकि वो लोग तो अपने आसपास की नकारात्मक शक्तियों के बहाव में आ जाते हैं। आप बच्चों को देखें। बच्चे ऐसे नहीं होते। उनमें अपने पावनताहीन जीवन से अन्य लोगों को प्रभावित करने की इच्छा नहीं होती। किसी भी बच्चे में नहीं होती। इसके विपरित बच्चे अत्यन्त चेतन होते हैं और पावन व्यक्तित्व बनना चाहते हैं।

गणेश तत्व का प्रभाव आँखों पर भी पड़ता है, ये बात मैं अवश्य कहना चाहूँगी। श्री गणेश आपकी आँखों के माध्यम से कार्य करते हैं। किस प्रकार से आप किसी व्यक्ति को देखते हैं, ये बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैंने देखा है कि कुछ लोग अपना दृष्टि–नियंत्रण पूरी तरह से खो देते हैं और कभी एक व्यक्ति को देखते है कभी दूसरे को, कभी तीसरे को। बिना वजह के किसी न किसी को देखते चले जाना! इसका अभिप्राय ये हुआ कि श्री गणेश का उन पर कोई नियंत्रण नहीं है। इस प्रकार से उनकी आँखे भी खराब हो सकती हैं अर्थात् ऐसी स्थिति में व्यक्ति किसी भी चीज़ विशेष पर दृष्टि केन्द्रित नहीं कर पाता। तो किस प्रकार से वह उसकी गहनता में जा सकता है, ध्यान केन्द्रित तो केवल उसी स्थिति में किया जा सकता है जब आप किसी चीज को केवल उस समय पर देखें। हर समय अपनी दृष्टि को घुमाते न रहें। यह दृष्टि दोष किसी भी प्रकार से आ सकता है क्योंकि श्री गणेश हमारी गलतियों को भांप लेते हैं। उदाहरण के रूप में लालची लोग ये देखना शुरु कर देते हैं कि किसने किस प्रकार के वस्त्र पहने हुए हैं और उन्हें कैसे वस्त्र पहनने चाहिएं। लालची व्यक्ति यदि किसी का अच्छा घर देखता है तो सोचता है कि मेरे पास भी इतना ही अच्छा घर होना चाहिए। परन्तु वे उस घर के सौन्दर्य को नहीं देख पाते, उस घर के वास्तविक सार को नहीं देखते। वो तो सिर्फ यही देखते चले जाते हैं कि मेरे पास भी ऐसा ही घर होना चाहिए। सौन्दर्य विवेक उनमें नहीं होता। उनमें तो केवल कब्जा करने की भावना होती है। ये भावना अत्यन्त बुरी होती है क्योंकि सौन्दर्य विवेक तो अत्यन्त गहन भाव है और कब्ज़ा करने की भावना अत्यन्त विकृत और आक्रामक। अतः व्यक्ति को चाहिए कि श्री गणेश के नज़रिये से चीज़ों को देखे कि किस प्रकार से वह कार्य करेगा। किस प्रकार से उनका उपयोग करेगा। बच्चों से आप सीखें कि चीज़ों को किस प्रकार देखना है और किस प्रकार कार्यान्वित करना है, ये देखकर आप हैरान होंगे कि बच्चे किस प्रकार सोचते हैं, कितने विवेकशील हैं और कितनी विवेकपूर्ण बातें करते हैं! मैं एक बच्चे से मिली। उसने मुझे कहा कि 'मैं चाँद को प्रेम करता हूँ' मैंने कहा 'ठीक है, चाँद में क्या कमी है?' 'कुछ

नहीं, परन्तु हर समय यह बादलों के पीछे ही छिपा रहता है।' मैंने कहा, कि वह ऐसा क्यों करता हैं? क्योंकि यह चलता बहुत अधिक है। इसके कारण वह थक जाता है और उसे आराम की आवश्यकता होती है। बादलों के पीछे छिपकर वह आराम करता है। वह यदि इतना अधिक न चले, शान्त रहे तो उसे छुपना न पड़े। कल्पना कीजिए कि इतना छोटा सा बच्चा ये सभी कुछ देखता है! मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि, मैं हैरान हो गई, एक छोटा सा बच्चा किस प्रकार जानता है कि ठीक क्या है और गलत क्या है। किस प्रकार व्यवहार करना है, किस प्रकार चीज़ों को समझना है और कार्य करने का उचित तरीका क्या है! उन्हें कुछ सिखाया नहीं गया, कोई बन्धन उन पर नहीं लगाए गए कुछ नहीं, फिर भी वे जानते हैं कि किस प्रकार आचरण करना है। परमात्मा उनकी हमेशा रक्षा करते हैं। मैं कई ऐसे बच्चों को जानती हूँ जो बहुत ऊँचाई से गिर गए परन्तु उन्हें कुछ नहीं हुआ। साँप और अन्य ज़हरीले जीव भी उन्हें नहीं काटते। कहते हैं कि शेर भी बच्चों को नहीं खाता। ये सब क्या है? ये कौन सी शक्तिशाली चीज है जिसके कारण बच्चे सुरक्षित हैं और उनका विकास होता है? इतने भयानक और अपवित्र जीवों (मनुष्यों) के बीच में रहते हुए भी बच्चे विकसित होते हैं। आज पुरुषों का महिलाओं के पीछे और महिलाओं का पुरुषों के पीछे दौड़ना आम बात है।

विश्वास नहीं होता कि स्वयं को सहजयोगी कहलाने वाले कुछ लोग भी ऐसा करते हैं! निःसन्देह सब ऐसे नहीं हैं परन्तु अभी भी कुछ लोग इस जाल में फंसे हुए हैं। ब्रह्माण्ड का सृजन करने से पूर्व श्री गणेश को स्थापित किया गया, आदिशक्ति माँ ने श्री गणेश का सृजन किया। यदि श्री गणेश जागृत हों तो समाज में रहना बहुत ही सुगम होता है। वहां तो सर्वत्र मैत्री भाव होगा क्योंकि ऐसे समाज में स्वामित्व भाव या विकृत भावना नहीं होती। व्यक्ति की दृष्टि यदि महिलाओं के लिए, धन के लिए या भौतिक पदार्थों के प्रति अपवित्र होगी तो उसके अन्दर गणेश तत्व खराब हो जाएगा। गणेश तत्व वाला व्यक्ति जानता है कि आनन्द, हर चीज का आनन्द किस प्रकार लेना है। वो चीज मेरी है तो कोई बात नहीं, आपको तो उसके सौन्दर्य का आनन्द लेने का तरीका आना चाहिए। यही आनन्द है। **ये आनन्द भाव यदि व्यक्ति में हो तो वह बूढ़ा नहीं होता क्योंकि वह तो हर समय आनन्द में रहता है। बूढ़ा होने की कौन सी बात है?** परन्तु प्रायः ऐसा होता नहीं। आप तो अत्यन्त आलोचना से भरे हुए, अत्यन्त स्वार्थी और कभी–कभी अत्यन्त मूर्ख होते हैं। आत्मा रूप में रहते हुए आप सब कुछ करें। स्वः (Self) क्या है? यह आनन्द के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। निश्चित रूप से आनन्दमय व्यक्ति वही होता है जो आनन्द के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त आनन्द प्रदायक और विनोदशील होता है। वह किसी का अपमान नहीं करता और छोटी से छोटी चीज़ में भी सौन्दर्य देखता है।

परमात्मा की सृजित सभी चीज़ें अत्यन्त सुन्दर हैं। सभी चीज़ों का स्वभाव अत्यन्त सुन्दर है। मुझे हैरानी होती है कि बहुत कम लोग कविता लिख पाते हैं क्योंकि वो तो प्रेम अभिव्यक्ति आदि मूर्खतापूर्ण चीज़ों का वर्णन करने में ही लगे रहते हैं जो व्यक्ति को उदास करती हैं। *उदासी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति का चिन्ह नहीं है। आपमें भी यदि उदासी की समस्या है तो एकदम से सावधान हो जाएं और देखें कि क्यों आपमें हर चीज के प्रति इस प्रकार का अटपटा दृष्टिकोण विकसित हो गया है?* क्यों नहीं आप हर चीज का आनन्द ले सकते? आप एक व्यक्ति को देखते चले जाइए, दूसरे व्यक्ति को देखते चले जाइए, आप बिल्कुल भी आनन्द न ले पाएंगे। परन्तु बच्चों को आप यदि देखें तो आपको अच्छा लगेगा। बच्चों के विषय में एक चुटकुला है। एक परिवार में खाना खाने के लिए एक मेहमान आया। बच्चे ने उसे खाते हुए देखा। कहने लगा, "माँ आपने कहा था कि वह तो घोड़े की तरह से खाता है, परन्तु वह घोड़े की तरह से नहीं खा रहा। अतः बच्चे अत्यन्त सहज, सहजहृदय होते हैं और इस सहजता से वे सबके दोष सुधारते हैं। बच्चों से क्या कहना है, इस बात पर ध्यान दिया जाना बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चों को आप ऐसी कोई बात न बताएं अन्यथा वो ऐसे ढंग से कहेंगे जो बहुत हास्यास्पद होगा। आरम्भ में बच्चे बहुत ही आज्ञाकारी होते हैं, आज्ञाकारिता उनके सहज स्वभाव के कारण होती है। फिर भी हमें चाहिए कि बच्चों को बहुत अधिक बातें न बताएं। हर समय ये कहकर कि 'ऐसा करो, ऐसा मत करो', भी हमें बच्चों को नियंत्रित नहीं करना चाहिए। ऐसा करने पर बच्चे आपकी बात को समझेंगे ही नहीं। बच्चे यदि पावन हैं, पावन समाज में यदि उनकी परवरिश होती है तो उन्हें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए मैं हमेशा कहती हूँ कि अपने बच्चों को हमारे (सहज) स्कूल भेजें क्योंकि बच्चों का पावन होना अत्यन्त आवश्यक है। पावनता का मूल्य समझना बच्चों के लिए बहुत आवश्यक है। पाश्चात्य देशों का आधुनिक समाज बच्चों की अबोधिता को नष्ट करने वाला है। बच्चों से हमें बहुत कुछ सीखना है–वे कितने अबोध हैं, कितने सहज हैं! बच्चे अत्यन्त उदार होते हैं। जो कुछ भी उनके पास होता है उसे अन्य लोगों को दे डालने में वे बिल्कुल नहीं हिचकिचाते। चीज़ों के प्रति स्वामित्व भाव उनमें नहीं आता। इस गुण की आप कल्पना करें! किसी को यदि कोई चीज़ अच्छी लगती है तो बच्चा कहता है ठीक है, आप ले लो। बच्चे इतने अद्वितीय होते हैं, हमें उनसे शिक्षा लेनी चाहिए। उनके मुस्कुराते हुए चेहरे, उनका हार्दिक आनन्द हमें सिखाता है कि किस प्रकार से व्यवहार करना है। उनके माध्यम से श्री गणेश स्पष्ट चमकता है। मैं तो ये कहूंगी कि जो सुन्दर–सुन्दर बातें वे करते हैं आप उन्हें लिख लें। अपने बच्चों की कही हुई बातों को लिख लें। बहुत ही दिलचस्प कथाओं की यह पुस्तक तैयार हो जाएगी। विश्व में

कौन से युद्ध हुए, कौन से भयानक कार्य हुए, उनके स्थान पर आप लिखें कि बच्चों ने आपको क्या बताया। समाज में प्रचलित फैशन की बेवकूफी में बच्चे विश्वास नहीं करते। आप देखें कि वे सदैव कितनी भली–भांति वस्त्र पहने हुए होते हैं। फैशन की उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती। वे स्वतन्त्र विचार के होते हैं, किसी समाज के दास नहीं होते। वे किसी ऐसी चीज को केवल इसलिए नहीं मानते क्योंकि बाकी के लोग उसे मानते हैं, वे अपनी ही शैली के अनुसार चलते हैं बहुत ही सम्मानमंय ढंग से रहते हैं, अत्यन्त गरिमामय होते हैं, उनमें पावनता विवेक अत्यन्त विकसित होता है। वो कोई ऐसा वस्त्र नहीं पहनते जिससे उनके शरीर का नंगापन दिखाई दे या ये पता चले कि उनमें कोई कमी है। कई बार हम अपने बच्चों की अनदेखी करते हैं, चाहे वह धन की समस्या के कारण हो या पति–पत्नी के पारस्परिक समस्याओं के कारण हो। परन्तु बच्चों की उपेक्षा हो जाती है। एक बार यदि बच्चों की उपेक्षा हो जाए तो उनके साथ कुछ भी हो सकता है। मेरे विचार से बच्चों को जन्म देकर उनकी उपेक्षा करना अपराध है। परिवार में, गृहस्थी में, बच्चों को मुख्य स्थान दिया जाना चाहिए और परिवार के सभी सदस्यों को उनकी देखभाल करनी चाहिए। बच्चे परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य हैं। परिवार के मुखिया को भी उन पर चिल्लाने का कोई अधिकार नहीं है, बिल्कुल भी नहीं। मैंने देखा है कि जिस प्रकार से हम बुरी आदतों को अपना लेते हैं, बच्चे जल्दी से उन्हें नहीं अपनाते, उन्हें इस बात का ज्ञान होता है कि ये बुरी बात है इसे नहीं किया जाना चाहिए। अपनी अबोधिता से वे जानते हैं कि ये कार्य गलत है, ये नहीं करना चाहिए। कभी–कभी हो सकता है कि वो आग से खेलना चाहें या वो ऐसा कुछ करें, परन्तु एक बार यदि वे आग से ज़रा सा भी जल जाएंगे तो उसके बाद कभी उसे छुएंगे नहीं। बच्चे बहुत शीघ्रता से सीखते हैं क्योंकि उनकी बढ़ती हुई आयु होती है। वास्तव में आवश्यकता इस बात की है कि बड़े लोग भी सीखें, बच्चों की तो बढ़ती आयु है, वो सीख रहे हैं। परन्तु बड़ों का क्या है? उन्हें भी सीखना होगा कि किस प्रकार से भला बनना है, किस प्रकार सभी के प्रति करुणामय एवं प्रेममय होना है।

आलोचना करने का दृष्टिकोण कहां से आता है? मैं नहीं जानती। परन्तु लोग जहां भी जाते हैं, आलोचना करनी शुरु कर देते हैं! बच्चे कभी आलोचना नहीं करते, आलोचना योग्य चीज़ों को वो कभी भी नहीं देखते। बच्चे किसी भी घर या स्थान पर जाते हैं तो उसका आनन्द लेने लगते हैं, घर की सभी अच्छी चीज़ों की तरफ उनकी दृष्टि जाती है। कहीं से वो आएंगे तो बताएंगे उनके यहां तो इतने सुन्दर श्री गणेश थे, ये चीज थी। वो घर चाहे गन्दा रहा हो, वहां चाहे दुर्गन्ध आ रही हो, परन्तु बच्चों का ध्यान इस ओर नहीं जाता। उनकी दृष्टि तो बस अच्छी–अच्छी चीज़ों की ओर होती है। आलोचना को वो नहीं अपनाते। अन्य चीज़ों की ओर नहीं झुकते। आधुनिक

समय में बच्चे जब बड़े होते हैं तो उनमें अजीबो–गरीब सोच विकसित हो जाती है। वे कहते हैं, मुझे ये पसंद नहीं है मुझे वो पसंद नहीं है और जीवन के विषय में उनमें अजीबो–गरीब धारणाएं बन जाती हैं। इनसे उन्हें बचाने का प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि आजकल समाज इतनी तीव्र गति से आगे जा रहा है। दूरदर्शन है तथा अन्य बहुत से प्रकार के विज्ञापन उपकरण तथा बहुत सी चीज़ें हैं जो बच्चों के लिए हितकर नहीं है। इस तरह के विज्ञापन तथा दूरदर्शन कार्यक्रम बच्चों को नहीं देखने चाहिए। बच्चे यदि आत्म साक्षात्कारी हैं तो ये सब चीजें देखनी उन्हें अच्छी ही नहीं लगती। हिंसा तथा बेवकूफी भरे दृश्य उन्हें अच्छे नहीं लगते। ये बात मैंने देखी है। परन्तु माता–पिता बच्चों के सामने बैठकर इन्हीं सब चीज़ों को देखते हैं और आनन्द लेते हैं। बच्चे भी क्योंकि वहां बैठे होते हैं इसलिए धीरे–धीरे यह सब भी उनके दिमाग में घर करने लगता है। परन्तु प्रायः बच्चों को हिंसा, मार–धाड़ आदि नहीं सुहाते।

अतः हमें बच्चों से बहुत कुछ सीखना होता है क्योंकि वो अबोध हैं, पवित्र हैं। उनके इन गुणों का सम्मान होना चाहिए, बच्चों को पीटने वाले, उन्हें चोट पहुंचाने वाले और उनकी हर इच्छा पूरी करने वाले लोग मुझे अच्छे नहीं लगते। बच्चों को उनके पावित्र्य में ही रहने देना चाहिए। उन्हें अच्छी अच्छी बाते समझाई जानी चाहिएं, पावित्र्य और सदाचार के लिए उनका सम्मान होना चाहिए। समाज में जितनी गलत चीज़ें प्रचलित हैं वो बातें उन्हें नहीं दी जानी चाहिएं। इनसे बच्चे बिगड़ जाते हैं। मैं एक बच्चे से मिली और बच्चे ने कहा मुझे कार चाहिए, मर्सिडीज़ कार। इस बात को सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई। ये धन लोलुपता भी बच्चों में बचपन से ही आ जाती है। बच्चों के सम्मुख यदि आप धन लोलुप बातें करेंगे तो बच्चे भी वही सब कुछ सीख जाएंगे और ऐसी ही बातें करने लगेंगे और भी बहुत सी चीज़ें हैं जिनसे हमें बच्चों को बचाना चाहिए। उन चीज़ों से जो उन्हें धन लोलुप बनाती हैं।

आज के समाज में ये समस्या है कि सर्वत्र आपको ऐसे लोग मिलते है जिन्होंने गैर–कानूनी धंधों से बेशुमार दौलत एकत्र कर ली है। ये सब करने की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु अब भी उनमें लोभ है और वो धन लोलुप हैं! मैं आपको बताती हूँ कि ये सब पागलपन है, वास्तविक पागलपन। एक मनुष्य चाहता है कि उसके पास पच्चीस कारें हों। क्या वो अकेला पच्चीस कारों में बैठेगा? व्यक्ति चाहता है कि उसके पास पच्चीस हवाई जहाज हों। इनका वह क्या करेगा? चे चीज़ें प्राप्त करने के लिए वह धोखाधड़ी करता है, लोगों को कष्ट देता है, दूसरों के धन पर कब्ज़ा करता है आदि–आदि। ये सब कुकृत्य करने से अच्छा है कि व्यक्ति गरीब ही बना रहे। तो आजकल जिस मार्ग पर लोग चल रहे हैं वह गलत है। यह दाईं ओर का–आक्रामकता–का मार्ग है। यही कहना चाहूंगी कि **हम सहजयोग को श्री गणेश से आरम्भ**

करते हैं जो कि बाईं ओर विराजमान हैं दाईं ओर नहीं। पहले अपनी बाईं ओर को विकसित करें फिर दाईं ओर को आएं। आप लोग ठीक हैं इसलिए हमने सहजयोग को पूर्णतः श्रीगणेश के अनुसार बनाया है। उनके विराजमान होते ही आप पूर्णतः ठीक हो जाते हैं और विवेक के अभाव के कारण कोई समस्या आपमें नहीं रहती। श्री गणेश के जागृत होते ही आप भली–भांति जान जाते हैं कि किस प्रकार आचरण करना है और किस प्रकार जीवन बिताना है। तब आप कामुकता, लोभ, आदि मूर्खतापूर्ण चीज़ों को नहीं अपनाते जिनके पीछे लोग पगलाए हुए हैं। बड़े होकर लोग किसी भी मूर्खता के पीछे दौड़ पड़ते हैं परन्तु बचपन में ही यदि उन पर अच्छी–अच्छी चीज़ों का प्रभाव पड़ा हो, संस्कारमय पारिवारिक जीवन, अच्छी विद्या, उचित मार्ग दर्शन, आवश्यक प्रेम एवं सहायता उन्हें प्राप्त हुई हो तो बच्चे अत्यन्त–अत्यन्त भले एवं सुन्दर बन जाते हैं। सभी सहजयोगियों को मैं ऐसे ही स्वभाव के शिशु या बालक प्राप्त करने का आशीर्वाद देती हूँ और कहती हूँ कि वे अपने बच्चों की भली–भांति देखभाल करें। ऐसा करना बहुत आवश्यक है क्योंकि यही बच्चे कल के सहजयोगी हैं। उनमें सभी सुन्दर गुण होने चाहिएं। आप लोग एक अन्य ही प्रकार के वातावरण से आए हैं परन्तु बच्चे अबोधिता की देन हैं। अतः वे अत्यन्त पावन हैं। उनकी पावनता का सम्मान और सुरक्षा किया जाना आवश्यक है। आशा है कि आप लोग बच्चों के महत्व को और उनमें श्रीगणेश के गुण को विकसित करने के महत्व को समझेंगे।

आपका बहुत–बहुत धन्यवाद!

क्रिसमस पूजा

25.12.02, गणपति पुले

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आप सबको क्रिसमस की मंगल कामनाएं। सहजयोग के अनुसार ईसा–मसीह आपके आज्ञा चक्र पर विराजमान हैं। उनका पूरा जीवन एक साक्षात्कारी व्यक्ति के गुणों का वर्णन है। अपने पूरे जीवन में उन्होंने दर्शाया कि व्यक्ति लालची और कामुक नहीं होना चाहिए। विश्व भर के लोग जिस प्रकार से लालची हैं उससे वास्तव में दुख होता है। बचपन से ही हमारे बच्चे किसी न किसी चीज की मांग करने में लगे रहते हैं। पूर्ण सन्तोष ही व्यक्ति को वह संतुलन, वह शान्ति प्रदान कर सकता है जिसको प्राप्त करने के पश्चात् व्यक्ति भौतिक चीज़ों के पीछे भागना छोड़ देता है। आजकल भारत भी पश्चिम के पीछे चल पड़ा है और उन्हें भी हर समय भौतिक पदार्थों की जरूरत होती है। अमरीका में अब यह दुर्घटना होने के पश्चात् लोग आध्यात्मिकता की ओर बढ़ रहे हैं। आध्यात्मिकता की ओर वो इसलिए आ रहे हैं क्योंकि वो ऐसा महसूस करते हैं कि उन्हें कहीं भी संतोष प्राप्त नहीं हुआ।

ईसामसीह के महान जीवन से हमें बहुत कुछ सीखना है। सर्वप्रथम तो उनका जन्म ही एक बहुत छोटी सी झोपड़ी में हुआ जैसे आपमें से अधिकतर लोग जब यहां आते हैं तो वे बहुत संतुष्ट होते हैं। जन्म के बाद उन्हें एक ऐसे पालने में डाला गया जिसमें सूखी घास बिछी हुई थी। अन्त में उन्होंने अपना जीवन सूली पर चढ़कर बलिदान कर दिया। उनका पूरा जीवन बलिदान की कहानी है क्योंकि उनके अन्दर शक्ति थी–वो शक्ति कि वो कुछ भी बलिदान कर सकते थे। उन्होंने अपना जीवन ही बलिदान कर दिया। अतः आप ये समझ सकते हैं कि ईसामसीह की महानता उनके महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व की देन थी। उन्हीं महान ईसामसीह की विश्व भर में पूजा होती है, विशेष रूप से पश्चिमी देशों में। परन्तु जिस प्रकार वो भौतिक पदार्थों के पीछे दौड़ते हैं इस पर आप हैरान होंगे। उनके पूरे कारखाने उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं की कहानियों के बल पर चलते हैं। फिर भी किस प्रकार से लोग अपने वैभव की शेखी बघारते हैं! स्वयं को इसाई दर्शाने के लिए वे अपने गले में क्रूस पहनते हैं। जिस क्रूस पर ईसा–मसीह को सूली चढ़ाया गया था उस चिन्ह को तो कभी गले में पहना ही नहीं जाना चाहिए। परन्तु पाखण्ड से लोग अपनी कमियों को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार से वे ईसा के बिल्कुल उल्ट हैं। केवल पुरुष ही नहीं उनकी पत्नियां और बच्चे भी अत्यन्त लोभी हैं। उन्हें ये चाहिए वो चाहिए। अब भारत भी इसी पागल दौड़

में फंस गया है। वो क्या मांगते हैं? वो (भारतीय) सोचते हैं कि ये सारी चीज़ें अपने पास एकत्र कर लेने से वो अत्यन्त सुखी हो जाएंगे। वास्तविकता ये नहीं है। हर समय लोग चीज़ों के पीछे दौड़ते रहते हैं और जो भी कुछ उन्हें प्राप्त होता है उसका वो आनन्द नहीं ले सकते। आश्चर्य की बात है कि अमरीका जैसे देश में जहां बिल्कुल भी भ्रष्टाचार न था फिर भी वहां पर लोगों ने बेशुमार पैसा बनाया, और वो ईसा मसीह के अनुयायी कहलाते हैं! ये बात मेरी समझ से परे है। किसी समय भारत अत्यन्त सन्त देश था जहां सन्तों का सम्मान होता था। परन्तु आज भारत लोभ के इतने गहरे गड्ढे में गिर गया है कि लोगों को समझ पाना अंसभव हो गया है। कहा जा सकता हैं कि वो ईसा–मसीह के अनुयायी नहीं हैं। अपने आपको इसाई कहने वाले भारतीयों की स्थिति तो सबसे खराब है। उन्होंने सभी प्रकार की पश्चिमी देशों की बुराइयां और लालच अपना लिया है। फिर भी वे स्वयं को इसाई कहते हैं। परन्तु ईसा मसीह ने दर्शाया है कि संसार में आपको किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। वे इतने महान व्यक्ति और इतने महान अवतरण थे। सर्वत्र उनका सम्मान हुआ क्योंकि उनमें बलिदान की महानतम शक्ति थी। इसलिए नहीं कि उनके पास कोई बड़ी कार थी या बड़ा घर था, परन्तु इस लिए कि वे अत्यन्त विनम्र थे। उनका जीवन इतना महान था कि आज भी वे लोगों के हृदय पर शासन करते हैं चाहे अत्यन्त निर्धन व्यक्ति के रूप में उनका जन्म हुआ और निर्धन मान कर ही उन्हें क्रूसारोपित कर दिया गया। अतः धन के पीछे दौड़ने वाले लोग किसी भी प्रकार से ईसाई नहीं हैं, वो तो ईसा के समीप भी नहीं है। यह सोच कर मैं अत्यन्त प्रसन्न एवं आनन्दित हूँ कि उन्होंने गरीबों और जरूरतमंद लोगों की मदद की। क्योंकि उन्होंने उनकी समस्याओं को समझा, उन्हें महसूस किया। सभी प्रकार के रोगियों तथा दलितों की उन्होंने सहायता की। परन्तु आज का विश्व इतनी मूर्खता पर उतर आया है कि आज सक्षम देश अन्य देशों को परस्पर युद्ध करने में सहायता करते हैं। युद्ध करने के लिए वे ईसाइयत की सृष्टि करते हैं। इस देश में ईसाई–मत क्या कर रहा है? बहुत से लोगों को ईसाई बना कर अपनी शक्ति बढ़ा रहा है। भिन्न स्थानों से मैंने सुना है कि किस प्रकार धर्म–परिवर्तन करके वे ईसाई बना रहे हैं! ईसा ने तो एक भी व्यक्ति का धर्म परिवर्तन नहीं किया! उन्होंने लोगों का उसी प्रकार अन्तर्परिवर्तन करना चाहा जैसा आप सब का हुआ है–धर्म परिवर्तन या जन्म–चिन्ह परिवर्तन करके नहीं।

धन तथा कामुकता के पीछे दौड़ने वाले ये तीसरे दर्जे के बेकार लोग क्या पा लेंगे? कभी–कभी तो मुझे अपने बारे में चिन्ता हो जाती है कि कहीं मेरे अनुयायी और बच्चे भी कोई सहज विरोधी कार्य न करने लगें–कोई भी ऐसा कार्य जो सहज मर्यादाओं के विरुद्ध हो। सहज नियमों में से एक है दीन–दुखियों की सहायता करना–उन लोगों की

जिन्होंने अभी तक आत्म साक्षात्कार नहीं प्राप्त किया है। हमें वो नहीं करना जो विश्व कर रहा है कि उन्हीं लोगों की मदद की जाए जो बर्बाद हो चुके हों। इस देश को तथा पूरे विश्व को यदि आप बचाना चाहते हैं तो आपको ईसा मसीह की तरह बनना होगा। अपने अन्दर बलिदान की भावना विकसित करें। यह भावना अत्यन्त शक्तिशाली होनी चाहिए क्योंकि आप सब आत्मसाक्षात्कारी हैं। यह भावना विकसित करने का प्रयत्न करें। दूसरों की सहायता करने की भावना। अपने जीवन में मैं ऐसे बहुत से लोगों से मिली हूँ जो सदैव अभाव–ग्रस्त लोगों को देने के लिए उद्यत थे। परन्तु इतने महान स्वभाव के लोगों को कभी कोई इनाम नहीं मिला। फिर भी यदि उन्हें किसी की सहायता का अवसर मिलता तो वे बहुत खुश होते। इस देश के लिए जहां स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए असंख्य लोगों ने अपने जीवन बलिदान कर दिए, यह अत्यन्त खेद की बात है। आज यहां क्या हो रहा है? आज यहां के शासक गण या उनके बच्चे धन बटोरने में लगे हुए हैं। इस देश में, जहां लोगों में इतना बलिदान भाव था, यह स्थिति क्यों आई? वो वास्तव में नेता थे। परन्तु आपमें से कितने लोग उन जैसे हैं? आपमें से कितने अपने धन में से किसी की सहायता के लिए कुछ दे सकते हैं? किसी की सहायता के लिए आप क्या करेंगे? खेद की बात है कि ईसाई राष्ट्र कभी भी ईसा के दिखाए मार्ग पर नहीं चले और हम भी उन्हीं जैसे बनते चले जा रहे हैं! मैं ये नहीं कहती कि हमें व्यापार नहीं करना चाहिए या धन नहीं कमाना चाहिए। आप ये कार्य कर सकते हैं। परन्तु ये सब करते हुए आपने याद रखना है कि 'किसके लिए आप ये सब कर रहे हैं? इसका आप क्या करेंगे? वास्तव में आप ये पता लगाएं कि पूरे वर्ष में आपने अपनी चीज़ों में से कोई एक क्या किसी को दी है। मैं ये नहीं कहती कि आप सूली पर चढ़ जाएं। नहीं ये कहना आपसे बहुत अधिक आशा करना होगा, परन्तु अपने सुख–सुविधा का एक थोड़ा सा हिस्सा तो आप अन्य लोगों के लिए कुर्बान कर सकते हैं।

सहजयोगियों को अत्यन्त करुणामय होना होगा अत्यन्त करुणा एवं प्रेममय। आपमें यदि ये गुण नहीं है तो आप सहजयोगी नहीं है। करुणा एवं प्रेममय होना पहली आवश्यकता है तथा अपने आस–पास की समस्याओं को समझकर अधिक से अधिक लोगों की सहायता करना। परन्तु वास्तविकता ये नहीं है। सहजयोगी भी अपने जीवन के मूल्य को नहीं समझते। सहजयोगी भी उसी मार्ग पर चल रहे हैं जिस पर ईसा मसीह चले थे। वे आत्म साक्षात्कारी हैं इस बात का अहसास उनमें होना ही चाहिए। अन्य लोगों के प्रति उनमें वही भावना होनी चाहिए। अन्य लोगों से उनका तारतम्य होना चाहिए और अपने अन्दर उन्हें ईसा मसीह के बलिदान का भी सदा अहसास होना चाहिए। हमारी आज्ञा को सुधारने के लिए, हमारे अहं को दूर करने के लिए, अहं से लड़ने के लिए किस

प्रकार उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया! फिर भी हममें इतना अहंकार है! जो भी बलिदान उन्होंने किया वह सब व्यर्थ है, इसे लोग समझते ही नहीं और न ही वे ईसामसीह के जीवन और उनके चरित्र को आत्मसात करते हैं। ये बहुत बुरी बात है। हम सब आत्मसाक्षात्कारी लोगों के लिए यह बहुत बड़ा संदेश है, हमारे सम्मुख यह बहुत महान उदाहरण है।

बहुत से कार्य करने शेष हैं। मेरा हृदय सदैव ज़रूरतमंद लोगों के साथ होता है और इसी लक्ष्य के लिए मैंने बहुत सी संस्थाएं आरम्भ की हैं। आप इस बात को भली–भांति जानते हैं। हाल ही में मैंने दिल्ली में निराश्रित महिलाओं और बच्चों के लिए कुछ आरम्भ किया है। उसके लिए अधिकतर पैसा मैंने स्वयं दिया है। परन्तु कार्य को पूर्ण करने के समय मैंने सोचा कि इसको समापन करने के लिए क्यों न सहजयोगियों से कहा जाए कि वे धन का योगदान दें। उन्होंने योगदान दिया। दिल्ली के सहजयोगियों को मैं मुबारकबाद देती हूँ कि उन्होंने अन्य सहजयोगियों को मार्ग दिखलाया। मैं हैरान थी कि इतनी बड़ी संस्था के लिए इतना सारा धन वे किस प्रकार जुटा पाए! हम ये नहीं देख पाते कि हमारे देश में महिलाएं किस प्रकार कष्ट उठा रही हैं, किस प्रकार निराश्रित महिलाएं कष्ट उठा रही हैं। बिना उनके किसी दोष के पति उन्हें त्याग देते हैं। इसी प्रकार से पति की किसी भी सनक के कारण उन्हें बच्चों समेत सड़कों पर छोड़ दिया जाता है। मुसलमान संप्रदाय में तो स्थिति बदतर है। मैंने सोचा कि कम से कम मुझे कुछ तो ऐसा करना चाहिए कि जिससे मैं लोगों का ध्यान उनके दुर्भाग्य और उनकी समस्याओं की ओर आकर्षित कर सकूं ताकि अपने पैरों पर खड़े होकर वे जीवन में वापिस आ सकें। मेरे विचार से सभी सहजयोगियों का ये कर्त्तव्य है कि जाकर चहूँ ओर देखें कि किसको सहायता की आवश्यकता है। केवल अपने लिए धन कमाने के लिए, केवल अपने लिए पैसा कमाने के लिए ही न जिएं; दूसरों की सहायता करने का प्रयत्न करें। उन लोगों की सहायता करें जिनकी वास्तव में सहायता की जा सकती है ताकि वो कहं कि सहजयोगियों ने ये कार्य किया है। जो भी धन मेरे पास है उससे मैं ये कार्य करने वाली हूँ। परन्तु मेरी इच्छा है कि आप भी उनके लिए कुछ करने का प्रयत्न करें।

ये देश दो वर्गों में बंटा हुआ है। एक धनाढ्य लोग हैं और दूसरे अत्यन्त निर्धन। ये निर्धन लोग मेरे हृदय को पीड़ा से भर देते हैं। मेरा हृदय पीड़ा से कराह उठता है। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार उनकी सहायता करूं क्योंकि ये जाति इतनी विशाल है। परन्तु यदि आप लोग ये फैसला कर लें तो आप चहुँ ओर जाकर इन निर्धन लोगों की सहायता करने के उपाय खोज सकते हैं। उन लोगों को आपकी सहायता की आवश्यकता है और आपमें सहायता करने की क्षमता है। महालक्ष्मी के आशीर्वाद से आप सब सक्षम हैं। अतः गरीबों की सहायता करने का प्रयत्न करें। घोर कष्टों

में फंसे हुए लोगों की सहायता करने का प्रयत्न करें। मैं जानती हूँ कि वे सहजयोगी नहीं है उनके सहजयोगी बनने की आशा न करें। वे सहजयोगी नहीं बन सकते। ईसा मसीह के समय कितने लोग सहजयोगी थे? कितने लोग ऐसे थे जो मानवीय समस्याओं को समझ सके? परन्तु ईसा ने ये कार्य किया और लोगों के पापों के बदले अपने जीवन को बलिदान कर दिया। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं! आज का दिन अत्यन्त हर्ष पूर्वक उनका जन्मदिवस मनाने का है। उनका जन्म तथा जीवन कितना अजीब था? कोई भी मानव इस प्रकार का जीवन न चाहेगा। परन्तु आप सब लोगों को उनके जीवन के सार को समझना चाहिए। लोभ के पीछे दौड़ना पागलपन है। लालच का कोई अन्त नहीं। लालची हमेशा लालची ही बने रहते हैं, हमेशा वो धन दौलत, ये, वो मांगते ही रहते हैं।

क्यों न अन्य लोगों को देखा जाए कि उन्हें किस चीज की आवश्यकता है? हम लोग जो कि सामूहिक चेतना में हैं, हमें समझना चाहिए कि लोगों की क्या आवश्यकता है और हम उनके लिए क्या कर सकते हैं। मैं जानती हूँ कि विज्ञापन के इस आधुनिक युग में ऐसा करना कठिन कार्य है। परन्तु हम सहजयोगी हैं। हमें सामान्य व्यक्ति बनना है। इन सब चीज़ों का सामना हमने संतों की तरह से करना है और अपनी विशेष शक्तियों द्वारा इन सभी बाधाओं को समाप्त करना है।

आज का दिन मेरे लिए और आप सबके लिए अत्यन्त आनन्द का दिन है। ईसा मसीह के जीवन को जब मैं देखती हूँ तो मुझे लगता है कि यह बहुत अल्पायु था। उनका जीवन कष्टों से कितना परिपूर्ण था? गरीबी के कारण नहीं, नहीं! उस घृणा और उन दुखों के कारण जो उन्हें दिए गए। गरीबी की उन्होंने चिन्ता नहीं की। इसके विषय में उन्होंने कभी कुछ नहीं लिखा। वास्तव में जो बात उन्हें बुरी लगी, वह थी हालात का इस तरह से बिगड़ा हुआ होना और लोगों को इस प्रकार से सताया जाना। इस समस्या का समाधान करने की पूरी जिम्मेदारी उन्होंने अपने ऊपर ले ली। उन्होंने ईसाई बनाए और वो क्या कर रहे हैं? केवल मूर्खतापूर्ण कार्य–मूर्खतापूर्ण। ये सब अर्थहीन है। ईसामसीह के जीवन और उनके महान कार्य के वैभव से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। आज जब हम सब उनका जन्मदिन मना रहे हैं तो हमें चाहिए कि उनकी बलिदान क्षमता तथा उनकी प्रेम क्षमता का उत्सव मनाएं।

सहजयोगी अब बहुत अच्छे और प्रेममय लोग बन गए हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु अभी भी मुझे लगता है कि उनमें लालच बना हुआ है। लालच का कोई अन्त नहीं। मैं आपको बताना चाहूंगी कि मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो धन के पीछे पागल हैं। जैसे अमरीका में मैने पाया कि संस्थाओं के मुखिया, निगम पार्षद तथा ऐसे लोग जिनके पास पच्चीस हवाई जहाज है और पचास से भी अधिक कारें हैं, वो भी लालची हैं! क्या वो पचास कारों में यात्रा करेंगे?

किस प्रकार वो इन सब गाड़ियों में घूमेंगे? क्या वे एक पैर एक गाड़ी में रखेंगे और दूसरा दूसरी में? फिर भी उनके पास इतनी गाड़ियां हैं। इस प्रकार का पागलपन बना हुआ है। वो कहते हैं कि अब कहने को कुछ भी नहीं है क्योंकि सभी कुछ जब्त कर लिया गया है। इस प्रकार के स्वभाव के लोगों के साथ क्या किया जाए? क्या पच्चीस हवाई जहाज और पचास कारें रखना पागलपन नहीं है? और उन्हें अपनी महानता का कोई अन्त नहीं दिखाई पड़ता! वो लोग इतने मूर्ख हैं! मर जाने के पश्चात् ये सब यही समाप्त हो जाएगा। हमेशा वे किसी न किसी चीज़ के पीछे लड़ते रहते हैं। अमरीका की यह अजीब बात है।

अतः आप लोगों को यह समझ होना आवश्यक है कि लालच हमें कहां ले जाएगा। ऐसी भी घटनाएं है कि एक युवा लड़की ने एक अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति से विवाह किया और जब वो वृद्ध व्यक्ति मरा तो अपना सारा धन इस युवा महिला के लिए छोड़ दिया। वृद्ध के बेटे ने आकर मुकदमा किया कि मैं उनका पुत्र हूँ और उनका पूरा धन इस महिला को कैसे दिया जा सकता है? युवा महिला को ख़रबों डालर मिले थे फिर भी वह बेटों को कुछ देना न चाहती थी। न्यायालय में उसने दलील पेश की कि उसने वृद्ध व्यक्ति के लिए इतना बलिदान किया है, इतना कुछ किया है, अतः उसका पूरा धन उसे मिलना चाहिए। लोग इतने निर्लज्ज हैं कि पैसा मांगते हुए उन्हें लज्जा नहीं आती! हर समय सुख–सुविधा, सुख–सुविधा, सुख–सुविधा। मानव को समझना इतना कठिन है! एक बार जब वो लोभ के मार्ग पर चल पड़ते हैं तो किसी भी सीमा तक गिर सकते हैं। बलिदान तो लोग जानते ही नहीं। मैंने देखा है जब गांधीजी ने लोगों को बलिदान के लिए कहा तो सारी महिलाओं ने अपने गहने दे डाले, अपने जीवन दे डाले। लोग जेलों में गए, स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सभी प्रकार के कार्य किए। परन्तु उन्हें किस प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त हुई? एकदम से विश्व भर के सारे ठग चौधरी बन बैठे, विश्व के सारे चोर अधिकारी बन गए। जिस देश में सभी कुछ महान तथा श्रेष्ठ हो और वो सारी चीज़ें व्यर्थ हो रही हों उस देश के विषय में आप क्या कहेंगे? क्या आप उदार व्यक्ति है? स्वयं से प्रश्न करें, क्या आपने अन्य लोगों की सहायता करने का प्रयत्न किया?

ईसा मसीह के जीवन से हमें समझना है कि उन्होंने अत्यन्त निर्धनता में अपना जीवन बिताया। वो सम्राटों के सम्राट थे फिर भी वो यूनान में गरीबी में रहे और पापी लोगों के लिए निरंतर कार्य करते रहे, उन लोगों के लिए कार्य करते रहे जो कठिनाई में थे। केवल एक व्यक्ति ने ये सब किया। अब आप लोगों की संख्या तो बहुत है। आपको भी कुछ करना होगा, आपको इन पार्षदों की तरह से नहीं होना। परन्तु ईसामसीह की तरह से कार्य करने के लिए आपको अपनी कमाई का कुछ हिस्सा, अपनी सुख–सुविधाओं का कुछ हिस्सा, अपने देश हित के लिए बलिदान करना होगा, क्योंकि आप

सहजयोगी हैं, साधारण व्यक्ति नहीं हैं। आपको आत्मसाक्षात्कार मिल चुका है। यह आप क्या कर रहे हैं? क्या आप सबसे धन मांग रहे हैं या सबको अपना प्रेम दे रहे हैं? मैं उन सहजयोगियों की कहानियां सुनना चाहती हूं जो जन–जन को अपना प्रेम एवं करुणा बांट रहे हैं।

मुझे खेद है कि आज ईसामसीह के जन्मोत्सव के दिन मुझे उनके जीवन के विषय में बताना पड़ा जो कि बहुत ही कष्टदायक है। हमें ये बात समझनी होगी कि इतने महान व्यक्ति को, इतने महान सहजयोगी को अपने जीवन में इतनी समस्याओं का सामना करना पड़ा। अपने ही लोगों ने उनका अनुचित लाभ उठाया। मुझे भी सहजयोगियों से इस बात का अनुभव हुआ। सहजयोग से वो रोगमुक्त हो गए फिर भी उन्होंने मुझे कष्ट देने का प्रयत्न किया। सभी लोग जानते हैं कि उन्होंने सहजयोग में धन बटोरने का प्रयत्न किया। उनके जीवन के मूल्य इतने घटिया हैं कि आप ये नहीं कह सकते कि वो आत्मसाक्षत्कारी हैं।

अतः हमें सोचना चाहिए कि किस प्रकार हम अन्य लोगों की सहायता कर सकते हैं, किसके लिए क्या कर सकते हैं। ईसा मसीह के जीवन से यह गुण व्यक्ति को सीखना चाहिए। मेरा जन्म ईसाई परिवार में हुआ परन्तु मैंने पाया कि ईसाई लोग अत्यन्त तुच्छ एवं मलिन हैं। हर समय वो एक दूसरे के खिलाफ योजनाएं बनाते रहते हैं तथा अत्यन्त ही धन लोलुप हैं। मेरे पिताजी जब जेल गए तो हमें चर्च से निकाल दिया गया। इनके अनुसार देश से प्रेम करना भी पाप है। उन्होंने ऐसा किया और जब वो वापिस आए और नागपुर के मेयर बने तो वही ईसाई लोग उनके महान प्रशंसक थे। उन्होंने मेरे पिताजी की शोभा यात्रा निकाली। इस पर मेरे पिताजी मुस्कराए और कहा, इस मूर्खता को देखो। ये कार्य अत्यन्त मूर्खतापूर्ण है और इस प्रकार की लोलुपता तथा मूर्खता रोकी जानी चाहिए। लोग धन और पदवियों के पीछे भागते हैं। ये पागल दौड़ बहुत ही बुरी चीज है। कुछ लोग, सारे सहजयोगी नहीं, ऐसा करते हैं। परन्तु सहजयोगियों में भी मैंने पाया है कि लोग अत्यन्त धन लोलुप हैं और वो सहजयोग में भी पैसा बनाते हैं। पैसे के मामले में मैं अत्यन्त नादान हूँ। पैसा मेरी समझ में ही नहीं आता। अतः वे लोग मुझे ठगते हैं। ठीक है, कोई बात नहीं। और लगातार वर्षों तक वे मुझे बेवकूफ बनाते रहते हैं। ठीक है, क्या किया जाए? और मुझे पैसा क्यों चाहिए? ये समस्या है कि यदि आप सावधान नहीं हैं और यदि आप धन लोलुप नहीं हैं तो अन्य लोग आपको ठगेंगे। मैंने कहा, उन्हें ठगने दो, जो चाहे करने दो परन्तु मैं ऐसा स्वभाव नहीं बना सकती कि मैं पैसे की खातिर लोगों के पीछे दौड़ती रहूँ। ऐसा कार्य मैं नहीं कर सकती! जो भी हिसाब किताब आप मुझे दिखाते हैं मैं उसे स्वीकार कर लेती हूँ, जो भी हिसाब आप भेजते हैं उसे मैं स्वीकार कर लेती हूँ। वो लोग नहीं जानते कि ऐसा करना गलत है और पापमय। अगर उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं

है तो मैं कुछ नहीं कर सकती। वे सब नष्ट हो जाएंगे, ऐसे सभी लोग नष्ट हो जाएंगे। ये बात मैं जानती हूँ। परन्तु यदि वे स्वयं इस बात को महसूस नहीं करते तो क्या किया जाए? सहजयोग से पैसा बनाना, क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? इतना मूर्खतापूर्ण कार्य करना? ये आम बात है परन्तु बहुत बुरी है।

मैं चाहती हूँ कि आप सब धन से ऊपर उठ जाएं। संसार की सभी भौतिक चीज़ों से ऊपर उठ जाएं। आप यदि ऐसा करेंगे तो कभी मूर्ख नहीं बनेंगे, कभी आपको कठिनाइयां नहीं होगीं। अतः इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण कार्यों में भागीदार न बनें। ये परमात्मा का कार्य है और इससे आपको पैसा नहीं बनाना, किसी भी प्रकार से नहीं। ईसामसीह के जीवन से हमें सीखना है कि अत्यन्त सामान्य व्यक्ति के रूप में जन्म लेकर भी उन्होंने बहुत महान कार्य किए। हमारी आज्ञा को ठीक करने के लिए उन्होंने पूर्ण प्रयत्न किया। आज भी यदि आप उनके विषय में सोचेंगे तो आपकी आज्ञा ठीक हो जाएगी, आज्ञा की समस्या ठीक हो जाएगी। मैं जानती हूं कि सहजयोगियों में बहुत से लोग बढ़ बढ़कर आगे आते हैं, हर समय आगे आने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, किसलिए? आपको क्या चाहिए? वे हर समय मूर्खों की तरह से अपने को आगे लाने का प्रयत्न करते हैं।

अतः **जिस प्रकार से ईसामसीह संतुष्ट थे, उसी संतुष्टि का अहसास अपने अन्दर करने के लिए आपको ध्यान धारणा करनी होगी और अन्तर्वलोकन द्वारा जानना होगा कि क्या आप संतुष्ट है? अपने जीवन में आपको अत्यन्त संतुष्ट होना होगा अन्यथा सहजयोग में होने का कोई लाभ नहीं। आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करना भी व्यर्थ है।** मैं हृदय से आपको आशीर्वाद देती हूँ कि आप ईसामसीह के चरित्र को अपना भविष्य मानें और विश्व की समस्याओं को समझें। पूरे विश्व की समस्याओं को अपनी समस्या समझें।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

नव वर्ष पूजा

वैतरणा संगीत अकादमी, 31.12.2002

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

इतनी बड़ी संख्या में कार्यक्रम के लिए आए आप सब लोगों को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। वास्तव में मैंने ये जमीन 25 वर्ष पहले खरीदी थी। परन्तु इस पर मैं कुछ न कर सकी क्योंकि इस पर बहुत सारी आपत्तियाँ थीं, आदि–आदि। परन्तु किसी तरह से मैंने इसकी योजना बनाई और अब ये सब कार्यान्वित हो गया है। आप सब लोगों को यहां देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है कि इतनी कठिनाइयों का सामना करने के पश्चात् आज मेरे सम्मुख मेरी पूजा के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए इतने सारे सहजयोगी उपस्थित हैं।

यहां पर मुझे अपने भाई बाबा की याद आती है जिन्होंनें भारतीय संगीत, शास्त्रीय संगीत तथा सभी प्रकार की कलाओं के प्रचार–प्रसार के लिए जी तोड़ परिश्रम किया। जो भी कुछ वो कर सके उन्होंने किया। खेद की बात है कि आज वो आप सबको देखने के लिए यहाँ हमारे बीच में नहीं हैं। बिना किसी पारितोषिक की आशा किए उन्होंने अथक कार्य किया। बहुत अच्छा होगा कि आप उन्हें अपना आदर्श मानें और उन्हीं की तरह से सभी कुछ कार्यान्वित करें। उनकी एक अन्य खूबी थी जो मैं जानती हूँ कि उन्होंने कभी दिखावा करने का प्रयत्न नहीं किया। वे अत्यन्त बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति थे परन्तु उन्होंने सर्वसाधारण लोगों की ओर ध्यान दिया, उनकी देखभाल की और उनमें संगीत कला को बढ़ावा दिया। इसी विचार के साथ मैंने निर्णय किया कि कला और संगीत के प्रचार–प्रसार के उनके लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मैं ये स्थान समर्पित कर दूं। ये देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है कि मेरा ये विचार फलीभूत हो गया है। काश कि आप लोगों को प्रसन्न करने के लिए आज मेरा भाई भी यहां होता! वो अत्यन्त प्रेम एवं करुणामय व्यक्ति था। मैंने देखा कि वो कभी किसी से नाराज़ नहीं हुए। सदा उन्होंने सभी लोगों की बहुत अच्छी तस्वीर मेरे सम्मुख पेश की। परन्तु इस विषय में कोई भी क्या कर सकता है?

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(मराठी से अनुवादित)

महाराष्ट्र की ये विशेषता है – लड़ना। लड़ने में वे बहुत अच्छे हैं। आप जो चाहे उनके लिए कर लें परन्तु उनकी खोपड़ी में कुछ भी नहीं बैठता। उनमें सूझ–बूझ बिल्कुल नहीं है, हमेशा लड़ने को तैयार रहते हैं, तलवारों से लड़ने के लिए भी। आपके झगड़ालू स्वभाव से मैं तंग आ चुकी हूँ। इस सुन्दर भवन का निर्माण हमारे शास्त्रीय संगीत

के लिए किया गया है। इस मामले को लेकर भी इन्होंने कई बार झगड़ा किया। मुझे लगा कि क्यों इस भवन का निर्माण महाराष्ट्र में किया जाए? महाराष्ट्र के इन लोगों के लिए कुछ करना बेकार है। किसी न किसी बात को लेकर उन्होंने लड़ना ही है, शर्म लिहाज़ तो है ही नहीं। बैठने को यदि उन्हें स्थान नहीं मिलता तो हम क्या कर सकते हैं? बिल्कुल भी परिपक्वता नहीं है? मेरी समझ में नहीं आता इन झगड़ालू लोगों में संगीत किस प्रकार है? उनका झगड़ा इतना बढ़ गया है कि मैं तंग आ गई हूँ। हर आदमी किसी न किसी बात की शिकायत कर रहा है। सहजयोग में आकर भी क्या आपको शांति प्राप्त नहीं हुई? महान सन्तों और साधुओं ने इस देश में इतना अधिक ज्ञान दिया परन्तु हमारे झगड़ालू स्वभाव को दूर करने के लिए इसका भी कोई प्रभाव न पड़ा। अपने नाम पर भी वो लड़ेंगे, मूर्खतापूर्ण आचरण करते रहेंगे! मै नहीं जानती कि महाराष्ट्र से ये मूर्खता कब दूर होगी? शान्ति–पूर्ण जीवन तथा सारी चीज़ों को शान्ति पूर्वक आत्म सात करना वो नहीं जानते। एकदम से चिल्लाने लगते हैं। हमारे विदेशी सहजयोगी कहते हैं क्या ये असभ्य लोग हैं? नहीं, नहीं ये बहुत पढ़े–लिखे हैं, परन्तु बहुत झगड़ालू हैं। किस बात के लिए वे लड़ते हैं, ये वही जानते हैं। कृपा करके सहजयोग में तो लड़िए नहीं। थोड़े से शान्त हो जाइए। इसका प्रयत्न कीजिए। हम परिवर्तित होना चाहते हैं, क्या ये बात ठीक नहीं है? लोगों में दोष देखने के स्थान पर ये देखें की आपमें क्या दोष हैं। बाबा–मामा ने महाराष्ट्र में, नागपुर में बहुत कार्य किया। नागपुर के लोग बहुत चुस्त हैं, उन्होंने उनकी सहायता की। परन्तु कोई भी ये बात नहीं समझता कि सहजयोग को समझना है और साधु बनना है। बहुत ही घटिया स्तर पर लोग सोचते हैं कि किसी भी तरह से पैसा बनाना है। कैसे आप सहजयोगी हो सकते हैं? व्यक्ति को महसूस करना चाहिए कि मैं आत्मसाक्षात्कारी हूँ, माँ ने मेरे लिए इतना कार्य किया है, अतः हमें भी अच्छी स्थिति प्राप्त करनी चाहिए। अतः आज निश्चय कीजिए कि झगड़ा नहीं करना है और न ही धन का लोभ करना है। धन के लालच ने महाराष्ट्र में सहजयोग कार्य कठिन कर दिया है। महाराष्ट्र में मैने बहुत परिश्रम किया और यहां पर मुझे सभी प्रकार के अनुभव हुए। कृपा करके महसूस करें कि आप सहजयोगी हैं और गरिमापूर्वक जीवन–यापन करें। सहजयोगी होने पर गर्व महसूस करें। सहजयोग में झगड़ा करने की कौन सी बात है? क्या ये राजनीतिक सभा है जिसमें आप शिकायत करें कि मुझे बैठने का स्थान नहीं मिला या मैं कुछ देख नहीं सका? मैं कुछ भी कहना नहीं चाहती थी, परन्तु आप लोगों को देखने के पश्चात् मेरे सामने और कोई रास्ता न रह गया, और मुझे कहना ही पड़ा। *अब अगर कोई परस्पर लड़ता है तो उसे सहजयोग से बाहर कर दिया जाएगा। किसी के भी साथ यदि आप प्रेमपूर्वक नहीं रह सकते तो सहजयोग में रहने का क्या लाभ है।* बाबामामा कभी किसी से नाराज़ नहीं हुए। आप भी कभी किसी पर बिगड़ें नहीं। किस प्रकार आप सभी लोगों की प्रशंसा करेंगे। मैं सोचती रहती हूं कि किस प्रकार

सभी लोग ऐसी अच्छी अवस्था प्राप्त कर सकेंगे? अत्यन्त प्रेम पूर्वक बाबा मामा सभी लोगों को साथ लाए, चाहे वो कोई भी हो। वे अत्यन्त निःस्वार्थ व्यक्ति थे। कभी वो मेरी कार में नहीं बैठते थे, कभी मेरे घर नहीं आते थे। बड़ी सूझ–बूझ वाले थे। वो भी महाराष्ट्र के थे लेकिन आक्रामक बिल्कुल न थे। इतने महान व्यक्ति के कार्य को आप लोग अपने हाथों में ले रहे हैं तो कम से कम कुछ उनके गुणों को भी अपनाएं। संगीत तथा कला को बढ़ावा देने के लिए हमने इस मंदिर की रचना की है। आपके बच्चे इस क्षेत्र में उन्नति करें। उन्हें संगीत की समझ होनी चाहिए। इन विदेशी लोगों को आपके संगीत की समझ है और आपको नहीं, क्या ये लज्जाजनक नहीं है? हमें संगीत की बिल्कुल भी समझ नहीं है, क्या लाभ है? आप चाहे इस अकादमी के विद्यार्थी न भी हो तो भी आपको संगीत की समझ होनी चाहिए। ताल और राग के मूल ज्ञान के बिना आप संगीत का आनन्द नहीं ले सकते। मेरा अनुरोध है कि आप सब झगड़ालू स्वभाव त्याग कर अपने अन्दर अच्छाई विकसित करें। सहजयोग का यही कार्य है। मुझे कभी–कभी लगता है कि बंजर भूमि में बीज डालकर आप कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। परन्तु अब सहजयोग में बड़ी संख्या में लोग आ जाने के कारण चीज़ें कुछ सुधरी हैं। अतः यहाँ पर केवल संगीत सीखने के लिए नहीं आएं, सहज तौर–तरीकों से आचरण करना भी सीखें। सहज की महानता को समझें अन्यथा यह सब बेकार है। आस–पास बहुत से अन्य संगीत विद्यालय हैं। इनमें संगीत सीखकर यदि आपने एक दूसरे का सिर तोड़ना है तो बेहतर होगा कि आप संगीत न सीखें। अतः कृपया संगीत के साथ–साथ जीवन संगीत को भी अपने रोज़मर्रा के आचरण में लाएं। जीवन संगीत को आचरण में लाए बिना इस कार्यक्रम का उद्देश्य पूर्ण न होगा। **शपथ लें कि कोई जो भी चाहे कहता रहे, आपको प्रतिक्रिया नहीं करनी।** दूसरी समस्या उल्टे–सीधे तरीके से धन कमाना है। यह समस्या बहुत अधिक बढ़ गई है। मैं इससे तंग आ चुकी हूँ। लोग सहजयोग में भी पैसा बनाते हैं। आप लोग परिवर्तित होंगे या नहीं? महत्वपूर्ण चीज संगीत का हमारे जीवन में प्रवेश करना है। जीवन में लय और रागदारी लाने के स्थान पर हम तो केवल लड़ते ही रहते हैं। दूसरों का बुरा सोचना और अपने स्वार्थ पर दृष्टि रखना बुरी बात है।

भूल जाएं कि भूतकाल में क्या घटित हुआ। परन्तु आज से यहां पर केवल सूझ–बूझ वाले करुणामय लोगों को ही लाया जाएगा जो अन्य सभी लोगों को प्रेमपूर्वक परस्पर समीप ला सकें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(हिन्दी)

नसीब से मुझे हिन्दी भाषा भी आती है और कहने को तो बात ये है कि अब संगीत ग़र शुरू हो जाए तो संगीतमय माने क्या? माने मनुष्य की जो बहुत उच्छृंखल स्थिति है उसको ठीक करना है, उसको तालबद्ध करना है, उसको व्यवस्थित करना है। वो जब तक नहीं होगा तो फायदा क्या? आप

लोग, और दूसरे लोगों में क्या फर्क है? आप लोग भी लड़ाई झगड़ा ही करते रहते हैं तो उसमें क्या फायदा?

सबसे बड़ी बात ये है कि अपने मन में प्रेम, श्रद्धा और भक्ति बढ़ानी चाहिए। जिससे, आपको भी शांति मिलेगी और सबको भी शांति मिलेगी। और बगैर शान्ति के संगीत का कोई अर्थ नहीं। आज जिस बाबा मामा के विचार से ये सुन्दर इमारत बनाई है और जिससे कि हम चाहते हैं लोगों में संगीत आ जाए, उन लोगों में शान्तिमय वातावरण आ जाए। आज दुनिया को सिर्फ शान्ति की जरूरत है। बाकी सब होते हुए भी बेकार है। हम लोग कितने शान्त हैं, वो देखना चाहिए। और इस शान्ति का असर जब इस देश में नहीं तो किस देश में होगा? सब लोगों का कहना ये है कि भारत वर्ष जो है ये शान्ति का दूत है। अब ऐसे तो दिखाई नहीं देता। लड़ाई–झगड़े आपस में मारा मारी, पता नहीं क्या कहा जाए? तो जो लोग संगीत सीखना चाहते हैं उनके अपने हृदय में भी संगीत होना चाहिए। हृदय में भी विचार करना चाहिए। पैसों के पीछे में भागना, औरतों के पीछे में भागना और सब गलत सलत काम करना, ये एक संगीतकार को शोभा नहीं देता।

मेरा अनन्त आशीर्वाद है कि ये संस्था प्रफुल्लित हो। इसमें आने वाले लोग संगीत सीखें और अपना जीवन संगीतमय करें। आशा है कि मेरी इच्छाएं पूरी करोगे। *जब भी तुम्हें गुस्सा आता है, जब भी तुम नाराज़ होते हो जब भी तुम शिकायत करते हो तो अपने को बता लिया करो कि मैं सहजयोगी हूँ।* मैं चीज और हूँ, माँ ने मुझे कहां से कहां बनाया। ये ग़र आप समझ लें तो आपको भी अपनी प्रतिष्ठा आ जाएगी। अगर आपके अन्दर ये नहीं आया तो बेकार है। ऐसे पचासों बना दे समान तो क्या फायदा? छोटी–छोटी चीज़ों के लिए लड़ना, झगड़ना, ये आप लोगों को शोभा नहीं देता। आप तो अब साधु–सन्त हो गए। बहुत ऊँची चीज हो गए, बहुत ऊंची। उसका आप अहसास ही नहीं करते, उसको आप समझते नहीं कि हम साधु–सन्त हैं। आप सोचते हैं हम भी वही रास्ते पर भिखारी हैं जो पहले थे। आज मैं कह रही थी कि आप सबको विशेष आशीर्वाद देती हूँ कि आप सब लोग संगीतमय हो जाएं।

(अंग्रेजी से अनुवादित)

आज मैं आप सबको आशीर्वाद देना चाहती हूं कि आप सब पूर्णतया संगीमय, लय से परिपूर्ण और अन्य लोगों को प्रसन्नता प्रदान करने वाले स्वभाव के हो जाएं, झगड़ालू स्वभाव के नहीं। जैसा आपने देखा है पाश्चात्य संगीत गलत दिशा की ओर चल पड़ा है, गलत दिशा में बढ़ रहा है। मैं नहीं चाहती कि आप उसके जाल में फंसे। मैं ये भी जानती हूँ कि ये सब लुप्त हो जाएगा, परन्तु सहज में आने के पश्चात् भी क्योंकि ये विनाशकारी है, यदि आपमें वही विनाशकारी धारणाएं बनी रहती हैं तो किस प्रकार से कोई आपकी सहायता कर सकता है? मुझे आशा है कि आप मेरे आदर्शों को पूर्ण करेंगे

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

किंगस्टन में पूजा

11.6.1980

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहां पर स्वयं के विषय में जानने के लिए एकत्र हुए हैं। ज्ञान यदि पुस्तकों तक ही सीमित होता तो किसी व्यक्ति का ये कहना कि वह स्वयं के विषय में जानता है कहां तक हमें उचित लगता? ये बात केवल हमारे मानसिक स्तर तक ही जाती और अपने मस्तिष्क की सूझ–बूझ से ही हम इसे समझ पाते। मानसिक सूझ–बूझ हमें तर्कसंगति से तथा बुद्धि से प्राप्त होती है जो कि अपने आप में अत्यन्त सीमित चीज है। अतः हम एक अन्य प्रकार की समझ में प्रवेश कर जाते हैं जो कि अपने आपमें ही अत्यन्त सीमित है। उदाहरण के रूप में, मै यदि आपसे कहूँ हमारे अन्दर आत्मा है, जिसका निवास हमारे हृदय में है तथा हमारे अन्दर एक शक्ति है जो हमेशा आपको पुनर्जन्म देने की प्रतीक्षा करती रहती है, ये बात यदि मैं आपसे कहूँ तो आप मेरी बात को केवल अपने मस्तिष्क से समझेंगे। ये सब बातें तो बहुत पहले से कही जा रही हैं, इनमें क्या नवीनता है? ज्यादा से ज्यादा मैं इन्हें आधुनिक फैशन के अनुसार पेश कर सकती हूँ। अत्यन्त बौद्धिक रूप से पेश कर सकती हूँ। परन्तु इस प्रकार भी आप बुद्धि के जाल में फंस जाएंगे और बैठकर इसका विश्लेषण करने लगेंगे। परन्तु पहुंचेंगे कहीं भी नहीं।

निःसन्देह एक शक्ति है जिसे 'कुण्डलिनी' कहा जाता है। इसके बारे में बहुत लोगों ने बताया है क्योंकि हजारों वर्ष पूर्व प्राचीन पुस्तकों में भी इसके बारे में लिखा गया था। ईसा मसीह ने भी कहा है कि आपको पुनर्जन्म लेना होगा। आपको दीक्षा स्नान (Baptism) करना होगा, धर्म के ठेकेदारों के माध्यम से नहीं। परन्तु 'जॉन द बैपटिस्ट' (John The Baptist) जैसे किसी परमात्मा द्वारा अधीकृत व्यक्ति द्वारा। यह शक्ति आपके अन्दर सुप्तावस्था में है लेकिन सभी लोग इसके विषय में अलग–अलग ढंग से लिखते हैं। परन्तु इस पर बहुत कम लोग एकमत हैं और इस कारण से व्यक्ति को एक अन्य भ्रम का सामना करना पड़ता है कि हमारे अन्दर एक शक्ति सुप्तावस्था में विद्यमान है, जिसके विषय में कुछ लोग कहते हैं कि ये हमें बिजली के झटके देती है, कुछ कहते हैं इसकी जागृति पर व्यक्ति मेंढक की तरह से उछलने लगता है और कुछ कहते हैं कि कुण्डलिनी जागृति के बाद व्यक्ति हवा में उछलने लगता है। इतनी भ्रम की स्थिति बना दी गई हैं। आप लोग साधक हैं युग–युगान्तरों से साधक हैं। युग–युगान्तरों से आप खोज रहे हैं। आप सच्चे साधक हैं परन्तु अपनी साधना में आप नहीं जानते कि आप कहां जाएं, किस चीज

की आशा करें। और इस प्रकार आप समस्याओं में फंस जाते हैं।

उस दिन जब मै स्विटज़रलैण्ड गई तो मेरा एक आयोजक बच्चा कहने लगा कि श्रीमाताजी यहां के लोग भारतीय गुरुओं पर संदेह करते हैं। मुझे इस बात पर प्रसन्नता है। वास्तव में मैं इससे बहुत प्रसन्न हूँ। कम से कम यहां के लोगों ने इन गुरुओं के विषय में सोचना तो शुरू किया। यहां के लोगों को भ्रम में फंसाया गया और धोखा दिया गया। परन्तु अब उनका भ्रम पूरी तरह टूट गया है और परमात्मा के विषय में बताने वाले ऐरे गैरे पर विश्वास कर लेना अब उनके लिए असंभव है। अतः पहला विषय जिस पर वो चाहता था कि मैं लोगों को बताऊं वह था गुरुओं के रहस्यों का पर्दा–फाश करना। यह अत्यन्त ही चुनौतीपूर्ण विषय है। परन्तु इस विषय पर मैंने वर्ष 1970 में भारत में और 1973 में अमेरिका में बताया था, परन्तु मेरी यह बात किसी को भी अच्छी नहीं लगी। लोग कहने लगे क्यों आप किसी की आलोचना करती हैं। असत्य–असत्य है और वास्तविकता वास्तविकता। यहां उपस्थित कुछ लोगों के माध्यम से आपको पता चल जाएगा कि किस प्रकार आपको भ्रम में फंसाया गया। धन ऐंठने के लिए आपको किस प्रकार धोखा दिया गया। आप यह बात नहीं समझते क्योंकि आप इससे ऊपर उठ चुके हैं। साधना का स्थान आपके लिए धन से ऊपर है, आप जानते हैं कि धन आपको आनन्द नहीं दे सकता। इस बात को आप भली–भांति जानते हैं। जिन लोगों नें ये बात नहीं समझी वो अब भी चट्टान (पर्वत की चोटी) के सिरे पर खड़े हुए हैं, उन्हें नीचे की खाई नज़र नहीं आई है। ऐसे लोग आगे आकर आपको लुभाते हैं और इस प्रकार बेशुमार धन एकत्र करते हैं। मैं महसूस करती हूँ कि यह अत्यन्त लज्जाजनक कार्य है परन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं कि वास्तविकता है ही नहीं। यदि वास्तविकता न होती तो उसकी नकल कैसे होती? यदि फूल न होते तो आप प्लास्टिक के फूल किस प्रकार बना पाते? अतः आपको यदि कोई गलत लोग मिले हों तो आपको चाहिए कि सच्चे लोगों को खोजने का प्रयत्न करें। सच्चे लोगों को खोजते हुए आपको अत्यन्त सावधान रहना होगा कि हम सच्चाई के सिवाए किसी अन्य चीज को स्वीकार नहीं करेंगे। परन्तु आपको सम्मोहित भी किया जा सकता है। सच्चाई का ज्ञान आपको न होने के कारण आपकी बुद्धि को छला भी जा सकता है। कोई संस्कृत भाषा में कुछ श्लोक बोलता है और आप सम्मोहित हो जाते हैं मानों संस्कृत भाषा कोई अद्भुत चीज हो! उदाहरण के रूप में कुछ शिष्य जो गुरुओं के पास गए तो उन्हें ऐसे ऐसे मंत्र दिए गए जिन्हें यदि आप भारतीयों को बताएं तो वे हंस–हंस कर दोहरे हो जाएंगे। जैसे–एक मंत्र दिय गया 'ठिंगा', ये मंत्र आप किसी भारतीय को बताएं तो वह हंसेगा। परन्तु इन लोगों ने इस प्रकार के अर्थहीन मूर्खतापूर्ण मंत्र के लिए तीन सौ पाउण्ड खर्चे थे। एक ऐसे शब्द के लिए जो मंत्र हो ही

नहीं सकता। मंत्र के लिए गुरु की आवश्यकता ही क्यों है? मंत्रों का भी एक विज्ञान है, परन्तु इसको बिना समझे हम मंत्रों के पीछे दौड़ पड़ते हैं क्योंकि ये लोग (कुगुरु) आपसे ऐसा ही चाहते हैं। क्योंकि उन्हें आपसे धन जो ऐंठना है। इतनी सहज सी बात है। उन लोगों का तो ये एक उद्यम है। हो सकता है आपने अपनी साधना के लिए सभी कुछ दे दिया हो क्योंकि आप ये बात जानते हैं कि भौतिक पदार्थ तथा धन आपको कहीं भी नहीं पहुंचाएंगे। इससे भी आगे आप चीज़ों को जान चुके हैं। आपकी मूल्य प्रणाली (सूझ–बूझ) भिन्न है। परन्तु जिन लोगों की मूल्य प्रणाली आपसे भिन्न है वो आपका नाजायज़ फायदा उठा सकते हैं। अतः स्वाभाविक प्रतिक्रिया, मैं समझ सकती हूँ, ऐसी ही होनी चाहिए।

परन्तु सच्चाई भी है जो आपके अन्दर विद्यमान है। आपके अन्दर आत्मा है जिसको यदि एक बार खोज लिया जाए तो आपको अपना पूर्णत्व मिल जाता है। जो आपको बताता है कि आपको अत्यन्त शान्त एवं मधुर व्यक्ति होना चाहिए। आपको ये बताना कि आप अपने इच्छाओं के, काम और लोभ के स्वामी बन जाएं तथा ये षड्रिपु किसी भी प्रकार से आपको नियंत्रित न करें, अत्यन्त हास्यास्पद बात है। यह तो आपको एक बड़ा सा भाषण देने जैसी बात है जो कि अर्थहीन है। इन सारे दुर्गुणों को आपने स्वयं कसकर पकड़ा है, इतनी मजबूत पकड़ के होते हुए किस प्रकार आप इनसे मुक्ति पाएंगे? सामान्य बुद्धि की बात है इनसे मुक्ति पाने के लिए आपको कोई अन्य चीज पकड़नी होगी। आपको यदि कोई ऐसी चीज प्राप्त हो जाए जो इनसे कहीं अधिक बहुमूल्य हो, कहीं अधिक गतिशील हो, आनन्दप्रदायक हो, जो आपमें सुरक्षा का भाव स्थापित कर सके, तब आप इन सब मूर्खतापूर्ण चीज़ों को त्याग देंगें। परन्तु देखें कि किस प्रकार ये कार्यान्वित होगा! किसी भयानक गुरु का एक शिष्य मेरे पास आया। इस भद्र पुरुष को उस कुगुरु ने पूर्णतः परेशान कर दिया था, समाप्त कर दिया था। यह व्यक्ति केवल परिचय भाषण दिया करता था। मैं नहीं जानती कि वो इस समय यहां है या नहीं परन्तु उसने बताया कि श्रीमाताजी, इसी हॉल में जहां आप भाषण दे रही हैं, उन प्रारंभिक भाषणों के लिए तीन सौ लोग आया करते थे। ऐसे लोगों के विषय में आप क्या कहेंगे? क्या ये बात स्पष्ट नहीं है? वह कुगुरु एक जाना पहचाना व्यक्ति है जो भाषण देने के लिए तथा पाठ्यक्रम बताने के लिए आपसे धन लेता है? उसने बहुत से लोगों को नष्ट कर दिया है। ये बात भी वैसी ही हुई जैसे मैं अभी लोगों को शराबखाने में जाते हुए देख रही थी। वहां से नशे में चूर कुछ लोग बाहर आते हैं तथा अन्य लोग उनकी दशा को देखकर शराबखाने के प्रति आकर्षित होते हैं! कभी–कभी तो मानव स्वभाव को समझ पाना असंभव होता है। सच्चाई यदि आपके सामने प्रकट हो जाए तो आप उसे सूली पर चढ़ा देते हैं। इन सब बातों की व्याख्या आप कैसे करेंगे? सत्य को स्वीकार करना ही आपकी

गरिमा है। सत्य में क्या आप कुछ और जोड़ना चाहते हैं? मान लो मैंने हीरों का हार पहना हुआ है यह मुझे सजाएगा, हीरों को नहीं। परन्तु यह (सत्य) हमें अलंकृत करने वाली लाखों चीज़ों से भी कहीं अधिक दैदीप्यमान है। इस बात को यदि आप स्वीकार करते हैं तो आप गरिमामय हो सकते हैं, इसके विषय में सोचें।

इन बाह्य चीज़ों से तथा इनके लुभावने और छल पूर्ण तौर–तरीकों से हम सम्मोहित हो जाते हैं। मैं आपको केवल इतनी ही बात बता सकती हूँ। इसी प्रकार से इन कुगुरुओं ने अब तक सारा कार्य किया है और एक के बाद एक उनका ये सम्मोहन अग्नि की तरह से फैलता रहा है।

आप उनसे पूछें कि आपको क्या प्राप्त हुआ है? उत्तर होगा हमसे ये बात मत पूछो हम अत्यन्त प्रसन्न लोग हैं। परन्तु तीन दिनों के बाद आपको पता चलता है कि इस व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली। हम अभी तक भी नहीं जानते कि मानव के इतिहास में यह अत्यन्त महत्पूर्ण तथा भयानक समय है। अन्तिम निर्णय आरम्भ हो चुका है। आज हम अन्तिम निर्णय का सामना कर रहे हैं। इस बात का हमें ज्ञान नहीं है कि सभी शैतानी शक्तियाँ, भेड़ की खाल पहने भेड़िए, आपको आकर्षित करने के लिए अवतरित हो गए हैं आपको चाहिए कि बैठकर केवल सच्चाई को पहचानें। इसका आरम्भ हो गया है। यह बात सत्य है इसका आरम्भ हो गया है।

आइए अब परमात्मा के दृष्टिकोण से देखते हैं कि वह किस प्रकार आपका आँकलन करेंगे। ये कहना बहुत आसान है कि हम परमात्मा पर विश्वास नहीं करते। ये कहना बहुत ही आसान है कि हम सरकार (परमात्मा) को नहीं मानते परन्तु यदि आप कोई गलत कार्य करें तो आपको पता चल जाता है कि सरकार कार्यरत है। इसी प्रकार ये कहना भी बहुत आसान है कि हम परमात्मा को नहीं मानते, परमात्मा अत्यन्त करुणामय हैं, प्रेममय और दयालु हैं, कि उन्होंने हमें स्वयं का ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्रता दी है। परमात्मा पर हम विश्वास करते हैं और उस पर हम अपना अधिकार मान बैठते हैं। परमात्मा ने हमें अमीबा से इस मानव स्थिति तक विकसित किया है, चहुँ ओर इतने सुन्दर विश्व का सृजन किया है, ये सभी कार्य किए हैं। परन्तु उसके निर्णय का अब हमें सामना करना होगा। उसका निर्णय ऐसा नहीं है जिस प्रकार हम समझते हैं कि वह एक न्यायाधीश की तरह से बैठा हुआ है, बारी–बारी आपको बुलाता है, वहां पर आपका एक वकील है। परमात्मा ने तो अत्यन्त सूक्ष्म ढंग से आपके अन्दर निर्णायक शक्तियाँ स्थापित कर दी हैं। मानव की विकास प्रक्रिया में उन्होंने ये सब कार्यान्वित किया है। कितनी सुन्दरता से मानव को अमीबा से मानव अवस्था तक विकसित करते हुए उन्होंने ये कार्य किया है। बहुत से पशुओं को विकास प्रक्रिया से निकाल फेंका गया। विशाल पशुओं के परिवारों में से केवल हाथी ही बचा। इन वर्षों में बहुत से पशु बच गए और बहुत से

एक–एक करके नष्ट हो गए। इसी प्रकार से बहुत ज्यादा आक्रामक मनुष्यों की नस्लें भी समाप्त होती चली गई। इतिहास को आप देख सकते हैं। कहने से अभिप्राय ये है कि आज के युग में आप किसी को अपनी सात बीवियों की हत्या करते हुए नहीं पाते। कहने से अभिप्राय है कि ऐसा करना असंभव है। हिटलर जैसा व्यक्ति आया और समाप्त हो गया। जो भी दूसरों पर सत्ता जमाने या उन्हें नियंत्रित करने के लिए आया वह समाप्त हो गया। दूसरों पर सत्ता जमाने के विचार समाप्त हो जाते हैं। लोग उन पर लज्जित होते हैं तथा मानव में संतुलन एवं शान्ति के महत्व को स्वीकार करने वाले नए विचार जन्म लेते हैं।

परन्तु क्या आप वास्तव में अपने अन्दर आन्तरिक शान्ति चाहते हैं? यदि हम वास्तव में आन्तरिक शान्ति चाहते हैं तो इसकी प्राप्ति के लिए हम क्या कर रहे हैं? **वास्तव में आँकलन शुरू हो चुका है और आपका आँकलन करने के लिए परमात्मा ने न्यायाधीशों का एक समूह आपके अन्दर बिठा दिया है। सभी न्यायाधीश, वहाँ बैठे हुए हैं।** ईसामसीह ने कहा था जो लोग मेरे विरुद्ध नहीं हैं वे मेरे साथ हैं। ये न्यायाधीश ही वे लोग हैं और यही आपके अन्दर स्थापित हैं। आपकी मेरूरज्जु (रीढ़) तथा आपके मस्तिष्क में बनाए गए चक्रों में ये विद्यमान हैं। मुझे खेद है कि यहाँ पर हमारे पास सूक्ष्म शरीर तंत्र का नक्शा नहीं है जिस पर आपको ये न्यायाधीश दिखाए जा सकें। ये अत्यन्त रुचिकर है और इन सब के स्थान दण्डाधिकारियों की तरह से हैं। ये लोग आपके मस्तिष्क में विराजमान हैं। कुण्डलिनी का प्रकाश जब इन चक्रों पर पड़ता है और ये चक्र आलोकित होते हैं तब आपमें भी आपकी अंगुलियों के सिरों पर आत्मा के प्रकाश की अभिव्यक्ति होती है। आपकी अंगुलियों के सिरे संवेदनशील हो उठते हैं। आपकी अंगुलियों की संवेदना बताती है कि आपके अन्दर के कौन से चक्र प्रभावित हैं। कुण्डलिनी जागृत होकर तालुक्षेत्र (ब्रह्मरन्ध्र) तक आती है, उस स्थान तक जो बाल–अवस्था में अस्थिविहीन होता है। तालू की हड्डी को ये बेंधती है। वास्तव में ये तालू अस्थि का छेदन करती है। जिस व्यक्ति के सिर पर कम बाल हों उसके तालू को आप देख सकते हैं कि कुण्डलिनी जागृत होने पर तालू बच्चे के तालू की तरह से थोड़ा सा नीचे को चला जाता है। पहले ये धड़कता है। इस धड़कन को आप अपनी आँखों से देख सकते हैं। कुण्डलिनी की धड़कन को आप त्रिकोणाकार पावन अस्थि में भी देख सकते हैं। कुण्डलिनी जब उठती है तो इसकी गति को आप कुछ लोगों की रीढ़ पर देख सकते हैं। व्यक्ति की स्थिति यदि प्रथम दर्जे की हो या यूँ कहें कि वायुयान प्रथम दर्जे का हो तो उसका उतार–चढ़ाव (कार्यशैली) भी प्रथम दर्जे का ही होता है। ऐसी अच्छी स्थिति वाले व्यक्ति में कोई बाधा नहीं होती। कुण्डलिनी को ऊपर चढ़ते हुए आप देख नहीं सकते। उदाहरण के रूप में मैं जब यहां आई तो मार्ग में यातायात की कोई समस्या न थी

और हम बड़ी ही शान्ति से यहां आ गए। किसी ने हमें देखा तक नहीं। परन्तु यातायात की समस्या यदि होती तो हम कहीं न कहीं अटक गए होते। इसी प्रकार से किसी व्यक्ति के चक्रों में यदि समस्या हो तो कुण्डलिनी भी रुक रुक कर उठती है और दिखाई पड़ती है। इसे आप अपनी आँखों से देख सकते हैं। तो इस प्रकार होती है कुण्डलिनी की जागृति। ऐसी नहीं, जैसे कुछ लोग कहते हैं कि व्यक्ति मेढक की तरह से उछलने लगता है। अब हमें अपने मस्तिष्क का उपयोग करना है। आधुनिक काल में मस्तिष्क का ठीक ठाक होना आवश्यक है। क्या हम मेंढक बनने वाले हैं? एक बार मानव बनने के पश्चात् क्या हम पक्षी बनने वाले हैं? मनोविज्ञान जैसे आपके विज्ञान भी इस बात पर विश्वास करते हैं कि सामूहिक चेतना प्राप्त करने के लिए आपको अचेतन में प्रवेश करना होगा। ये वैज्ञानिक लोग अब इस बात को स्पष्ट कह रहे हैं। अतः हमें इस प्रकार की बात को स्वीकार कर लेना चाहिए कि हमें सामूहिक चेतना में प्रवेश करना है। इसलिए नहीं कि मैं ऐसा कह रही हूँ या अन्य व्यक्ति ऐसा कह रहा है। ये घटना तो आपके अन्दर घटित होनी चाहिए।

उस दिन मैं हैम्पस्टेड (Hampstead) में थी। मुझे इस बात का पता चल जाता है कि किसके साथ क्या घटित हो रहा है। कुछ लोगों को चैतन्य लहरियाँ आ गईं, उन्होंने अपने हाथों पर शीतल लहरियों का अनुभव किया, परन्तु कुछ लोगों को ये अनुभव नहीं हुआ फिर भी उन्होंने कह दिया कि हमें अनुभव हो गया है। और फिर वे गायब हो गए। आपको स्वयं से इस प्रकार व्यवहार नहीं करना। स्वयं को प्रेम करना है। अपनी साधना का सम्मान करना है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। माँ के नाते मेरा ये बताना आवश्यक है कि यह अत्यन्त गम्भीर मामला है। यहाँ कोई गुरु व्यापार नहीं हो रहा। आपको अपना आत्म–साक्षातकार प्राप्त करना है। ये आपको प्राप्त करना है। ये सौभाग्य की बात है कि आप इस समय पर जन्में हैं और इसे प्राप्त कर सकते हैं। आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए ही आपने इस समय पर जन्म लिया है क्योंकि आप युग–युगान्तरों के साधक हैं। जैसा मैंने आपको बताया था ये बात भारत के एक शास्त्र 'नल आख्यान' में वर्णित है। नल ने, जिसे कलि ने बहुत सताया था, एक बार कलि को पकड़ लिया। आजकल ये कहा जा रहा है कि अब कलि का शासन है। कलि वो आसुरी शक्ति है, जो सारे भ्रमों को जन्म देकर लोगों को भ्रमित करता है। उसने नल को भी भ्रमित कर दिया, जिसके कारण नल का अपनी पत्नी से बिछोह हो गया। नल ने जब कलि को पकड़ा तो उससे कहा, "अब मैं तुम्हारा वध कर दूंगा, हमेशा के लिए तुम्हें मिटा दूंगा ताकि आगे कभी भी तुम लोगों को भ्रमित न कर सको।" कलि ने उत्तर दिया ठीक है, तुम मेरा वध कर सकते हो, ये बात मैं स्वीकार करता हूँ। परन्तु वध करने से पूर्व मेरा महत्व जान लो। मेरा भी कुछ महत्व है।" नल ने कहा,

"तुम्हारा क्या महत्व हो सकता है? तुम तो लोगों के मस्तिष्क भ्रमित करते हो, तुम्हारा क्या महत्व हो सकता है?" उसने उत्तर दिया कि जब मेरा साम्राज्य होगा अर्थात आधुनिक युग में वह (कलि) लोगों के मस्तिष्क भ्रमित करेगा। ये सारी बातें अब ठीक साबित हो रही हैं। हम इसी प्रकार की बातें करते हैं, कहते हैं, "हो सकता है ये बात ठीक हो, हो सकता है गलत हो, हो सकता है यह अच्छा हो, हो सकता है यह बुरा हो। ये वो समय है जब पृथ्वी पर भ्रम का राज्य होगा। यही कलियुग है–आधुनिक काल। आधुनिक काल– जिसमें पर्वतों और दरी–कंदराओं में परमात्मा को खोजने वाले महान संत एवं साधक सर्वसाधारण गृहस्थियों में पृथ्वी पर लौट आएंगे और सत्य को प्राप्त करेंगे। इसी भ्रम काल में ही साधकों को सत्य का दिव्य दर्शन होगा। वे स्वयं सत्य बन जाएंगे उन्हें उनका आत्मासाक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा। ये सुनकर नल अपने बदले की भावना और क्रोध को भूल गया और ये भी भूल गया कि उसके साथ कलि ने क्या किया था। नल ने कहा, "कि इस गुण के कारण मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ क्योंकि मैं उन साधकों का सम्मान करता हूँ। इस सामूहिक हित के लिए अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को छोड़ता हूँ। केवल कलियुग में ही सत्ययुग का सूर्य उदय होगा।

सत्य का संसार, दिव्य प्रकाश का युग आने वाला है और जंगलों में सत्य की खोज करने वाले संत अब इस संसार में जन्म ले रहे हैं। वे साधू स्वभाव हैं। बनावटी जीवन के मजाक को वे स्पष्ट देख सकते हैं। वे जानते हैं कि ये सब हास्यास्पद है परन्तु उन्हें वास्तविकता का ज्ञान नहीं है। अब समय आ गया है और यह कार्यान्वित हो जाएगा। आपके महान देश में ये कार्यान्वित हो चुका है, अब तो, मैं कहूँगी कि कम से कम एक हजार लोग भली–भांति इसमें हैं, जिन्होंने इसे समझ लिया है। कम से कम तीन सौ लोग ऐसे हैं जो भिन्न स्थानों पर इसे कार्यान्वित कर रहे हैं।

किंग्स्टन नामक इस प्राचीन नगर में आने की मुझे प्रसन्नता है जहां पर सम्राट की ताज़पोशी का पत्थर रखा गया था। इस स्थान में अवश्य कोई विशेषता रही होगी परन्तु वास्तविकता के प्रति लोगों की संवेदना समाप्त हो गई हैं–सर्वत्र, केवल इसी देश में ही नहीं। भारत में तो यह स्थिति और भी अधिक है। ये बात सुनकर आप हैरान होंगे कि वहां के सभी लोग परिष्कृत बनने का प्रयत्न कर रहे हैं! विकसित बनने का प्रयत्न कर रहे हैं, उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है कि इस विकास से आपको क्या प्राप्त हुआ। कोई जब उन्हें वास्तविकता बताता है तो उन्हें विश्वास नहीं होता। वे समझते हैं कि आप आनन्द ले रहे हैं परन्तु उनसे झूठ बता रहे हैं। विकसित होकर वे भी आनन्द ले सकते हैं।

अतः ये समझना अत्यन्त आवश्यक है कि लक्ष्य क्या है? लक्ष्य प्राप्ति के लिए कुण्डलिनी आपके अन्दर स्थापित कर दी गई है। परन्तु मैं कहूँगी कि कुण्डलिनी बहुत

बड़ी न्यायाधीश हैं, पूरे ब्रह्माण्ड में उन जैसा न्यायाधीश आपको नहीं प्राप्त हो सकता क्योंकि वे आपकी अपनी माँ हैं। वे निर्वाज्य हैं अर्थात देती ही रहती हैं। आपसे किसी भी चीज की आशा नहीं करतीं। उनकी एक ही इच्छा होती है कि आप अपने वैभव को प्राप्त करें। इसके अतिरिक्त वे आपसे कुछ भी नहीं चाहतीं कि आप स्वयं को पहचान लें, अपने पूर्णत्व को पा लें। वे आपसे केवल इतना ही चाहती हैं। आपके साथ बार–बार जन्मी वे आपकी माँ हैं। अपने लिए, अपने उत्थान के मार्ग में आपने जो समस्याएं खड़ी की हैं, वे सब उन पर अंकित हैं। आपके विषय में वे सभी कुछ जानती हैं और इस मामले में आपका आँकलन भी करती हैं कि कितनी गंभीरता से आप अपना उत्थान चाहते हैं। वे पूरी गंभीरता से आपको जानती हैं। ऊपर उठते हुए उन पर सभी चिन्ह दिखाई देते हैं। वे दर्शाती हैं कि आपमें क्या कमी है। परन्तु वे आपकी अपनी हैं, उनसे अधिक आपका अपना कोई भी नहीं है। वे आपकी मित्र हैं और वे आपको आँकती भी हैं ताकि आपको सर्वोत्तम उपलब्धि प्राप्त हो सके। वे ये भी जानती हैं कि आपके लिए सर्वोत्तम क्या है। बच्चा बिजली के सॉकेट में यदि उंगली डालना चाहे तो माँ उसे रोकती है परन्तु बच्चा माँ की बात नहीं सुनता, बिगड़ जाता है और वो उसके हाथ को सॉकेट से हटा देती है। क्योंकि वो उससे प्रेम करती है, उसका प्रेम पावन है जिसमें व्यक्ति प्रेम के पात्र से कुछ आशा नहीं करता। ऐसी शक्ति आपके अन्दर सुप्तावस्था में विद्यमान है और जागृत होने के अवसर की प्रतीक्षा कर रही है। बीज के अंकुरण की तरह से जब इसका अंकुरण होता है, जब ये ऊपर को उठती है तब कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो आपकी देखभाल कर सके, आपका मार्गदर्शन कर सके। कोई ऐसा व्यक्ति जो आपकी अंगुलियों पर होने वाली संवेदना का कूट (Decode) खोल सके अर्थात आपको ये बता सके कि अपनी अंगुलियों पर जो आप महसूस कर रहे हैं उसका ये अर्थ है। इसके बिना आपको अपने आश्रय स्थल (moorings) समझ न आएंगे। आप ये न समझ पाएंगे कि आप कहां जा रहे हैं और इस प्रकार से अज्ञान के जाल में फंसने की संभावना बनी रहेगी। ये भी हो सकता है कि वहां रहते हुए भी आपको अधिक ज्ञान न प्राप्त हो सके। अतः वे चाहती हैं कि कोई व्यक्ति उनका प्रतिनिधि (Mouthpiece) बने। ये आवश्यक है कि अचेतन किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से बात करे और वह माध्यम भी ऐसा होना चाहिए जिसका स्वभाव कुण्डलिनी जैसा हो। जो लोग आपसे पैसा बनाते हैं, आपका दुरुपयोग करते हैं, बीच मझधार आपको छोड़ देते हैं, उन्हें किस प्रकार से गुरु कहा जा सकता है? वो तो चोर हैं जो आपके दरवाजे पर खड़े अवसर की प्रतीक्षा में हैं कि कब आपको पकड़ें। उन लोगों का अब आँकलन शुरू हो चुका है, उन्हें त्यागा जा रहा है, जेल भेजा जा रहा है और वो चाहते हैं कि अधिक से अधिक लोग उनके साथ हों।

कुण्डलिनी, जब जागृत होती है तो सर्वप्रथम यह आपको शारीरिक चैन देती है, वास्तव में ये आपको शारीरिक चैन देती है और इस प्रकार से फल के रूप में और उपफल के रूप में आपको सुन्दर स्वास्थ्य प्राप्त हो जाता है। उदाहरण के रूप में कुण्डलिनी जागृति के बिना कैंसर रोग को ठीक नहीं किया जा सकता, ये बात मैं बताती चली आ रही हूँ। डाक्टरों को भी जब कैंसर हो जाता है तो वो मेरे पास आते हैं और ठीक हो जाते हैं। परन्तु मैं यहां पर कैंसर रोगियों को ठीक करने के लिए नहीं बैठी हूँ। सहजयोगियों को भी कैंसर रोगियों में कोई दिलचस्पी नहीं है। आपको यदि आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हो गया, जो लोग यहां बैठे हुए हैं इनमें से अधिकतर को कुछ न कुछ शारीरिक या मानसिक रोग था। इनमें से कुछ तो मिर्गी–रोगी भी थे और कुछ को गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं थीं। कुछ को रक्त कैंसर था तथा कुछ अन्य शारीरिक रोगों से पीड़ित थे। परमात्मा के दिव्य प्रेम, उनकी इच्छा (कुण्डलिनी) से आपको इन सब समस्याओं का सामना करना होता है। कुण्डलिनी परमात्मा की इच्छा की प्रतिनिधि है। करुणा एवं प्रेम के सागर की इच्छा की। परमात्मा यह साम्राज्य आपको अर्पित करना चाहते हैं, आपको इस साम्राज्य का राजकुमार बनाना चाहते हैं। यह अत्यन्त गंभीर बात है और इस पर हमें ध्यान देना चाहिए। इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि निर्णय होना है तथा हमारे अन्दर ऐसी शक्ति विद्यमान हैं जो हमारा आँकलन करेगी। यह शक्ति परमात्मा की इच्छा है, उस परमात्मा की जो सर्व–शक्तिमान है, जिन्होंने हमें हमारी स्वतंत्रता प्रदान की है। यह शक्ति (कुण्डलिनी) परमात्मा को चुनौती नहीं देगी। उनकी शक्ति, उनकी ताकत, हमारी स्वतंत्रता का विरोध नहीं करेगी। उनकी इच्छा कुण्डलिनी के रूप में आपके अन्दर विद्यमान है और यही इच्छा जागृत होकर आपके अन्दर उठती है। यह आपको आलोकित करती है, विवश नहीं करती, आपसे आपकी स्वतंत्रता नहीं छीनती, ये आपको प्रकाश प्रदान करती है ताकि आप देख सकें। आपको इस विश्व में रहने की स्वतंत्रता है, कोई आपको विवश नहीं करता कि आप यहाँ बैठें, वहां बैठें, ऐसे चलें वैसे चलें। किसी भी बात के लिए आपको विवश नहीं किया जाता। आपको एक आलोकित स्थान दे दिया जाता है, जिससे आप अपनी स्वंतत्रता को बेहतर ढंग से, अधिक सूझ–बूझ से उपयोग करें। आप क्योंकि आलोकित होते हैं इसलिए देख सकते हैं। आपको इस बात का ज्ञान होता है कि क्या स्वीकार करना है क्या नहीं करना।

पहली आवश्यकता आपका आलोकित होना है। जब तक आप आलोकित नहीं हो जाते तब तक आप भ्रम में फंसे रहते हैं और चीज़ों को देख नहीं सकते। निर्णय आपकी स्वतंत्रता पर छोड़ दिया जाता है। तो कुण्डलिनी आपको रोगमुक्त करती है, आपको सुधारती है और सभी आशीष आपको देती है। भौतिक चिन्ताओं से आपको मुक्ति देती है। जैसे मैंने देखा है कि

आत्मसाक्षात्कार के पश्चात लोगों की भौतिक समस्याओं का समाधान हो जाता है। ऐसा नहीं है कि वो श्रीमान फोर्ड या उन्हीं जैसे धनवान बन गए हैं परन्तु व्यक्ति का दृष्टिकोण ही बदल जाता है और उसकी भौतिक समस्याओं का समाधान हो जाता है। हां क्योंकि इसके लिए भी हमारे अन्दर चक्र है। आपकी पारिवारिक समस्याओं का समाधान हो जाता है, पति–पत्नी की समस्याओं का समाधान हो जाता है ताकि आप स्वतंत्र हो जाएं। जो समस्याएं आपको चिन्तित करती हैं उनकी पकड़ ढीली पड़ जाती है। आप इन चीज़ों को अधिक स्वतंत्रता पूर्वक देख सकते हैं कि क्या चुनना है और जीवन में कौन सा मार्ग अपनाना है।

आपको ये सब रियायतें, लाभ तथा संभव सहायता प्रदान करने के पश्चात् आपका आँकलन किया जाता है। क्या इतने उदार किसी न्यायाधीश की कल्पना आप कर सकते हैं? यह हमारे अन्दर विद्यमान है। परमात्मा ने जो कृपा हम पर की है उसके लिए हमें उनके प्रति कृतज्ञ होना पड़ेगा। परन्तु हमें इस बात का कोई अहसास ही नहीं है। हम तो बस उस पर अपना पूर्ण अधिकार मान बैठते हैं। जो भी कुछ हमारे अन्दर है उस पर अपना अधिकार मान लेते हैं। परमात्मा ने जो कृपा एवं करुणा हम पर की है उनके लिए हम उनका धन्यवाद भी नहीं करते। छोटी–छोटी इच्छा की प्राप्ति न होने पर भी हम उनका महत्व भूल जाते हैं। फिर भी वो विद्यमान हैं, कुण्डलिनी हमारे अन्दर विद्यमान है। इसके विरुद्ध चाहे जो आप करते रहें यह बनी रहती है। कुछ लोगों की कुण्डलिनी को मैंने देखा है कि वह कितनी घायल अवस्था में होती है! दर्द और पीड़ा के निशान कुण्डलिनी पर बने हुए होते हैं और दर्द से कराहती हुई वह अपनी करवटें बदलती है। फिर भी वह बनी रहती है और उस क्षण की प्रतीक्षा करती है जिसके लिए उसे वहां स्थापित किया गया है। ऐसा आशीर्वाद आपको कहां प्राप्त हो सकता है? यह सब आपके अन्दर विद्यमान है और इसे कार्यान्वित होना है। परन्तु आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद भी लोग गायब हो जाते हैं। पाश्चात्य देशों में जो विकास हुआ है उसकी क्या आप कल्पना कर सकते हैं? आप लोग तीन कदम आगे चलते हैं और चार कदम पीछे! लोगों पर वास्तव में आपको हैरानी होगी। मैं समझ नहीं पाती कि पाश्चात्य मस्तिष्क जो कि भौतिक लाभ के विषय में इतना स्पष्ट है उसे क्या हो गया है! जब सहजयोग में उनकी स्थिति की बात आती है तो उनका स्तर कभी–कभी तो निम्नतम होता है। आप समझ नहीं सकते कि किस प्रकार इनमें आत्म सम्मान का पूर्ण अभाव है। भारत के गाँवों के लोग एकदम से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं और फिर इसमें उतर जाते हैं। उनमें किसी प्रकार की भी भटकन नहीं होती, बस स्थिर हो जाते हैं। मैं मानती हूँ कि जटिलताएं हैं परन्तु आपमें आत्म–सम्मान होना ही चाहिए। कभी–कभी तो यह बात आपको चोट पहुंचाती है। शायद आप

नहीं जानते कि इस देश में मैने सात या आठ लोगों पर चार वर्ष लगातार कार्य किया है। चार वर्ष, क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं? ये नहीं कि आपमें कोई कमी है। आप साधक हैं। आप संत है जिन्होंने इस देश में जन्म लिया है। परन्तु आपकी सन्त–सुलभता को क्या हो गया है? आप इतने चंचल और उथले क्यों हैं? गहनता से क्यों नहीं आप इसे स्पर्श करते? क्यों नहीं इसे समझते? ये बात मुझे समझ नहीं आती कि क्यों आप अपना सम्मान नहीं करते?

मैं आपका अत्यन्त सम्मान करती हूँ और प्रेम करती हूँ क्योंकि मैं आपको जानती हूँ। युगों से मैं आपको पहचानती हूँ। आप मेरे खोए हुए बच्चे हैं, ये बात मै जानती हूँ। परन्तु मैं ये नहीं जानती कि किस प्रकार इसे (आत्म साक्षात्कार) आपके अन्दर स्थापित करूं? कभी–कभी तो मेरी स्थिति वैसी ही हो जाती है जैसी आपकी कुण्डलिनी की है। आपको ये बता देना आवश्यक है कि इसे प्राप्त करने की आपको बहुत जल्दी होनी चाहिए। आपको अत्यन्त गतिशील होकर इस कार्य को करना है तथा लोगों से बातचीत करनी है और उन्हें बताना है कि अब आपातकालीन स्थिति है। क्या आप ये नहीं देख सकते कि विश्व में क्या हो रहा है? क्या आप भ्रम को नहीं देख सकते? परन्तु स्थिति को स्वीकार कर लिया जाता है। स्थिति का यदि सामना भी करते हैं तो अत्यन्त बौद्धिक तरीके से। परिणाम स्वरूप आप स्वयं को दोषी समझ बैठते हैं। जैसे वियतनाम के मामले में। ये बहुत अच्छा दृष्टिकोण है। आराम कुर्सी राजनीतिज्ञों की तरह से यहां बैठकर वियतनाम के बारे में सोचना या सारे मामले के दस्तावेजों को फाइल में लगाकर बन्द कर देना। परमात्मा द्वारा चुने गए आप ही वो लोग हैं जिन्होंने इसे (आत्म–साक्षात्कार) प्राप्त करना है, उसे पाना है। परन्तु वास्तविकता को अपनाने के लिए आप सौ बार सोचेंगे और उल्टे सीधे चक्करों में फंस जाएंगे। ये सब हो जाता है। इसके लिए मैं किसे दोष दूं–इन भयानक गुरुओं को या उन लोगों को जिन्होंने आपके लिए दिखावा बनाया है या आध्यात्मिकता के प्रति आपका कृत्रिम दृष्टिकोण इसके लिए जिम्मेदार है? जिस प्रकार चीजें चल रही हैं उन्हें देखकर कभी–कभी तो मैं काँप जाती हूँ। लोग तो इस पर अपना अधिकार मान लेते हैं। आज ये आपकी जिम्मेदारी है, उन लोगों की जिन्हें साधक माना जाता है, कि वे वास्तविकता को लोगों के सामने लाएं और उन्हें बताएं कि वे इसे देखें और प्राप्त करें। आप क्योंकि उनके साथी हैं, उनके संबंधी हैं, किस प्रकार आप उन्हें छोड़ सकते हैं? चाहे आपको आत्म–साक्षात्कार मिल जाए या आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर लें आप उन्हें भूलेंगे नहीं, उनके विषय में सोचेंगे। आत्म–साक्षात्कार मिल जाए या आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर लें आप उन्हें भूलेंगे नहीं, उनके विषय में सोचेंगे। आत्म–साक्षात्कार प्राप्ति की भी आपको तब तक प्रसन्नता नहीं होगी जब तक आपके सभी अपने तथा अज्ञान के

कारण खोए हुए सभी सन्त आत्म–साक्षात्कार को पा नहीं लेते। आप उनके विषय में सोचेंगे।

मुझे ये कार्य आपके माध्यम से कार्यान्वित करना है। अकेले मैं ये कार्य नहीं कर सकती। मैं यदि अकेले इसे कर सकती तो कोई कठिनाई न होती। परमात्मा यदि इस प्रकार से इस कार्य को कार्यान्वित कर सकते, लोगों को आत्म साक्षात्कार दे सकते, उन्हें स्थापित कर सकते तो सब ठीक हो जाता। इस प्रकार ये कार्य न होगा क्योंकि आपको स्वतंत्रता प्राप्त है। आपको स्वतंत्रता क्यों प्राप्त है? क्योंकि स्वतंत्रता के बिना आप उस स्थिति तक नहीं आ सकते जिस स्थिति के द्वारा आपको उन्नत किया गया है। हम इस बात को महसूस नहीं करते कि आज हम कहां है।

कई बार तो मुझे ऐसे लगता है मानो मैं दीवारों से बातें कर रही हूँ। उदाहरण के रूप में आप लोग देखेंगे कि कई लोग घड़ियों के दास हैं। उनके पास सहज के लिए कोई समय नहीं है–ओह हम बहुत व्यस्त हैं! किसलिए आप समय बचा रहे हैं? क्यों ये विचार आपमें आया? हमारे पूर्वजों ने कभी ऐसा नहीं किया। आप क्यों इस प्रकार समय बचा रहे हैं? काहे के लिए? आप उत्थान के लिए समय बचा रहे हैं। शराब खानों तथा घुड़दौड़ आदि मूर्खता पूर्ण चीज़ों के लिए नहीं। उत्थान प्राप्ति के लिए आप समय बचा रहे हैं। आप क्योंकि हीरे हैं इसलिए आपको तराशा जाना आवश्यक है। स्वयं आपने खुद को तराशना है। समय को बर्बाद करने के लिए आप इसे नहीं बचा रहे। मेरे विचार से सर्वोत्तम विज्ञापन ये होगा कि 'तीन हजार पाउण्ड खर्चें और पचास पाउण्ड बचाएं।' ये भी ऐसा ही है। बर्बाद करने के लिए आप इसे नहीं बचा रहे। इसे आप किसी अत्यन्त अमूल्य, अत्यन्त अहम् एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए बचा रहे हैं। उस उपलब्धि के लिए जिसे आप तलाश कर रहे हैं। कभी–कभी मैं ये नहीं समझ पाती कि किस प्रकार आपको गहनता के उस स्तर तक बनाए रखूं। निःसन्देह इस देश में कुछ लोग उस उच्च स्तर के हैं और वे अत्यन्त संतुष्ट हैं। हम नहीं जानते कि इस देश में कितना कार्य हुआ है तथा परमात्मा ने भी कितना कार्य किया है। उदाहरण के रूप में मैं पहाड़ी झुकाव (Stone Hunch) को देखने के लिए गई। यह पृथ्वी माँ का सृजन है। वहां पर आप चैतन्य लहरियाँ देख सकते हैं, इन्हें महसूस कर सकते है। इस देश में भी बहुत से कार्य हुए है। किंग्स्टन भी इतना अधिक चैतन्यमय है कि मुझे हैरानी हुई। आप लोग क्या देखते हैं? कम से कम सौ लोगों ने जानने का साहस किया, कुछ लोगों ने पैदल चढ़ाई और उतराई की, कुछ लोग इसे पार कर गए और कुछ ने बीच में ही इसे छोड़ दिया। वो लोग निर्णय कर रहे थे परन्तु संवेदना से उनका कोई सामीप्य न था। वास्तविकता की उनमें कोई संवेदना न थी। वे इसे महसूस नहीं कर सकते। शायद ये कार्यान्वित हो जाए, मुझे विश्वास है ऐसा हो जाएगा। मैं अत्यन्त आशावादी व्यक्ति हूँ। आप इस बात को देख सकते हैं। वास्तव में

आशावाद मेरा स्वभाव है। मैं इसे मानती हूँ, यह कार्य करेगा। आपकी तथाकथित स्वतंत्रता मार्ग में खड़ी हो जाती है। अतः यह समझने का प्रयत्न करें कि आपको स्वतंत्रता इसलिए दी गई है कि आप आत्मा बन सकें, इसलिए नहीं कि आप पशु बन जाएं। मुर्गे को आत्म–साक्षात्कार देने का क्या लाभ है? ये एक दूसरी बात है कि मैं मुर्गों को आत्म साक्षात्कार दे भी पाऊंगी या नहीं। बहुत से लोग कहते हैं कि "श्री माताजी मैंने बहुत से अच्छे कार्य किए हैं। मैं कहती हूँ आपने कौन से भले कार्य किए है?" 'मैं चिकन नहीं खाता।' मैं पूछती हूँ मेरे कारण से आप चिकन क्यों नही खाते? कृपा करके आप स्वयं को बचाएं। तो इस प्रकार से लोगों में सभी प्रकार के अटपटे विचार भरे हुए हैं।

अतः आप साधकों के लिए ही, सुन्दर जीवन वृक्ष की आप सब कलियों के लिए ही, इस सारी सृष्टि का सृजन किया है। उन्होंने ही उत्थान प्राप्त करना है। उन्हीं को ये प्राप्त करना होगा। उन्हीं के अन्दर पूरा ब्रह्माण्ड खिल उठा है। वो लोग क्या कीड़े (Worms) बनना चाहते हैं? इस बात को सोचें, इसे सोचकर देखें! परमात्मा की कृपा से हम आत्म साक्षात्कार का कार्य करेंगे और ये कार्य एक पल में भी हो सकता है। ये भी हो सकता है कि आप सबमें ये कार्य हो चुका हो क्योंकि आज मुझसे कुछ अधिक ही–कुछ अधिक ही (चैतन्य बह रहा है)। किंग्स्टन बहुत अच्छा स्थान है। हो सकता है एक दिन ये बहुत महान स्थान बन जाए, ऐसा मुझे लगता है। इसी कारण से मैंने इसके लिए बधाई दी। आपका किंग्स्टन में होना अच्छी बात है परन्तु देखना ये है कि इस क्षेत्र में बहने वाली चैतन्य शक्ति का आप कितना उपयोग करते हैं। मुझे आशा है कि कुछ न कुछ कार्यान्वित हो जाएगा। *आत्म साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आपने इसे गंभीरता से लेना है इसे कार्यान्वित करना है क्योंकि इसे पाकर भी आप अचानक सूर्य या चांद को नहीं छू लेते। और अगर चांद को छू भी लें तो भी क्या हो जाएगा?* आप कुछ भी न समझ सकेंगे। अतः आपको अपने अस्तित्व के सभी क्षेत्रों में प्रवेश करना होगा क्योंकि आड़ोलन तो अंदर ही आरम्भ होगा। अपने चित्त को आपने अपने अन्दर के सभी क्षेत्रों में ले जाना है। अपने चित्त को स्थापित करना है। इस प्रकार आपका चित्त मूर्खता पूर्ण चीज़ों के शिकंजे से मुक्त हो जाएगा। आपकी सभी प्राथमिकताएं परिवर्तित हो जाएंगी। महानतम बात ये है कि कुण्डलिनी जब सहस्रार को बेधती है तो व्यक्ति के अन्दर आनन्द का प्रवाह चालू हो जाता है। अपने हाथों से शीतल चैतन्य लहरियों का बहाव आप महसूस करते हैं–परम चैतन्य की शीतल लहरियां। सर्वत्र आप इन्हें महसूस करने लगते हैं और इन्हें खोज सकते हैं। अब आप स्वयं को तथा अन्य लोगों को जाँच सकते हैं और स्वतः लोगों की सहायता कर सकते हैं। इसके लिए आपको कहीं जाना नहीं पड़ता। कोई दवाइयाँ नहीं लेनी पड़ती, कुछ नहीं करना पड़ता।

बस अपने आप में स्थापित होना पड़ता है। मोक्ष प्राप्ति में आप लोगों की मदद करते हैं मानो सारी मशीनरी कार्य करने लगी हो। पूरी तकनीक दूरदर्शन यंत्र की तरह से कार्य करने लगती है जिसे आप चालू करते हैं और सभी कुछ देखने लगते हैं। आपको स्वयं पर हैरानी होती है। परन्तु आपको इसकी तकनीक का ज्ञान प्राप्त करना पड़ेगा और ये जानना पड़ेगा कि इसे किस प्रकार अपने पर और अन्य लोगों पर कार्यान्वित किया जाए। ये कार्य अत्यन्त आनन्दायी है। हम सब इस आनन्द की स्थिति में हैं और आपको भी हमारा साथ देना चाहिए। ये अद्वितीय है। कष्टों के लिए इसमें कोई समय नहीं। साक्षात्कारी व्यक्ति सोचता है कि क्यों ये लोग ऐसा कर रहे हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे, कोई बड़ा हाथ, परिपक्व व्यक्ति बच्चों की ओर देखता है कि 'ओह' क्यों ये बच्चे अपने हाथ आग में डाल रहे हैं!

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

जन्मदिवस समारोह

20.3.03, निर्मल धाम, दिल्ली

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज सभी लोग आपसे अंग्रेजी में बात कर रहे हैं। शायद उन्हें लगता है अधिकतर लोग अंग्रेजी भाषी हैं।

काश जीवन के विषय में मैं आपको कुछ नया बता पाती। जीवन चलता ही जाता है आप चाहे अस्सी के हों या नब्बे के इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। देखना केवल ये होता है कि सहजयोग से प्राप्त किए प्रकाश को आपने कितना उपयोग किया है। सहजयोग में अब आप सब लोग ज्योतिर्मय हो चुके हैं। आपकी कुण्डलिनियाँ ऊपर हैं और मैं सोचती हूं कि आपमें से अधिकतर को इस बात का ज्ञान है। परन्तु इसके बावजूद भी, महत्वपूर्ण बात ये है कि आप स्वयं को मानव मुक्ति के लिए समर्पित करें, इस कार्य में उनकी सहायता करें। लोगों की आलोचना करने या उनकी प्रताड़ना करने के स्थान पर आपका कर्त्तव्य ये है कि आप उन्हें उच्च स्तर पर लाएं ताकि वे अपना सम्मान करें, अपने आत्म–साक्षात्कार का सम्मान करें। ऐसा करना बहुत आवश्यक है क्योंकि आरम्भिक दिनों में मैं बहुत से ऐसे सहजयोगियों से मिली और पाया कि वे अपने साथियों तथा अन्य चीज़ों की आलोचना में ही लगे हुए थे। परन्तु आत्मसाक्षात्कार पा लेने के पश्चात् ये उनका कर्त्तव्य बन जाता है कि मुक्ति प्राप्ति में वे सभी लोगों की सहायता करें। तब ऐसी कोई समस्या न रह जाएगी। कोई भी राजनैतिक, आर्थिक या अन्य प्रकार की समस्या न रहेगी। ये सारी समस्याएं मानव मस्तिष्क की देन है। उस मस्तिष्क की जो कि अभी पूर्ण विकसित नहीं है। एक बार यदि यह विकसित हो जाए तो फिर चिंता की कोई बात नहीं रहती। फिर आप दूसरे लोगों के लिए चिंतित होते हैं, अन्य लोगों की मुक्ति के लिए चिंता करते हैं। ऐसा स्वतः होता है। मुझे कुछ कहना नहीं पड़ता। आप लोगों ने अपने जीवन में देखा होगा कि किस प्रकार से जीवन के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तित होता है। यह दृष्टिकोण परिवर्तन ही महत्वपूर्ण है।

आपमें से कुछ लोग राजनीति, व्यापार तथा अन्य चीजों में अत्यन्त सफल हैं। परन्तु जब तक आप अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार नहीं देते, उन्हें अपने जैसा कुशल नहीं बनाते, तब तक आप संतुष्ट नहीं होते।

सहजयोग द्वारा इतने सारे लोगों की सहायता होते देख मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मुझे कभी आशा न थी कि अपने जीवन में मैं ये सब देख सकूंगी। परन्तु ये कार्यान्वित हो गया है, बहुत अच्छी तरह से कार्यान्वित हो गया है। वास्तव में मैं हैरान हूं कि किस

प्रकार चीज़ें कार्यान्वित हो गयी हैं। वास्तव में मैं हैरान हूँ कि किस प्रकार चीज़ें इतनी तेजी से बढ़ीं और सहजयोग बहुत सारे देशों में, बहुत से लोगों के दिलों में उन्नत हुआ और किस प्रकार उन्होंने सहज को अपनाया! लोग केवल अपने देश में ही नहीं देश के बाहर भी कार्य कर रहे हैं। आखिरकार अब मैं हर जगह तो नहीं जा सकती। परन्तु इसके बावजूद भी सहजयोग फैल रहा है। मेरे लिए ये बहुत बड़ी बात है– अत्यन्त संतोष प्रदायक। जब मुझे पता लगता है कि सहजयोग फलां देश में पहुँच गया, दूसरे देश में पहुँच गया तो मेरी प्रसन्नता की आप कल्पना नहीं कर सकते। व्यवहारिक रूप से मुझे बताया गया है कि 43 देशों में सहजयोग जोर–शोर से जम गया है और बहुत से अन्य देशों में छोटे स्तर पर चल रहा है। परन्तु ये सब सुनने की भी मैंने कभी आशा न की थी कि यह इतनी तेजी से बढ़ेगा! इसका श्रेय सहजयोगियों को जाता है जिन्होंने ये चमत्कार कर दिखाया है।

भारतीय और विदेशी लोगों की मैं आभारी हूँ कि उन्होंने बिना किसी की आलोचना किए, बिना किसी का अपमान किए, मानव मुक्ति का ध्वज उठाया है और तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। ऐसा करना बहुत सुगम है। परन्तु आपकी अपनी क्या स्थिति है? क्या आप इस सब से ऊपर उठ पाए हैं? क्या आप अन्य लोगों को भी उन्नत कर रहे हैं?

हम पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं। पूरे विश्व की समस्याओं को आप समझने लगते हैं तथा कुण्डलिनी की जागृति द्वारा इनसे मुक्ति पा सकते हैं। मैं आपको बताती हूं कि यह कुण्डलिनी इतनी महान चीज है कि यह मानव को सर्वश्रेष्ठ बना देती है। कहावतों आदि में भिन्न प्रकार से इसका वर्णन किया गया है परन्तु सहजयोगी के पास महान शक्ति होती है और ये महान शक्ति ये है कि वो अन्य लोगों को सहजयोगी बना सकता है। वे अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें। उन्हें चाहिए कि अपनी शक्तियों का उपयोग करें और पूरे विश्व को परिवर्तित करने का प्रयत्न करें। ये मेरी इच्छा है। मैं नहीं जानती कि अपने जीवन काल में मेरी इच्छा पूर्ण होगी या नहीं, परन्तु आप सब लोगों को भी इसी प्रकार निर्णय लेना चाहिए और मुझे विश्वास है कि यह सब कार्यान्वित हो जाएगा।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

जन्मदिवस पूजा

21.3.03, निर्मल धाम, दिल्ली

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सारे सहज योगियों को हमारे ओर से अनन्त आशीर्वाद। इतने बड़े तादाद में आप लोग आज यहां पर हमारा जन्मदिवस मनाने के लिए पधारे। मैं किस तरह से आपको धन्यवाद दूं? मेरी तो समझ में नहीं आता है! बाहर से भी इतने लोग आये हैं और अपने भी देश के इतने यहाँ सम्मिलित हुए। ये देखकर के हृदय भर आता है। न जाने हमने ऐसा कौन सा अद्‌भुत कार्य किया है जो आप लोग हमारा जन्म दिन मनाने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। आप लोगों का हृदय भी बहुत विशाल है कि आपने आज के दिन इतने दूरस्थ स्थित जगह पर आकर के हमें सम्मानित किया। हमारे पास तो शब्द ही नहीं हैं कि आप लोगों से बताया जाए कि इससे हम कितने आनन्द से पुलकित हो गए!

अंग्रेजी से अनुवादित :

मैं उन्हें ये बता रही थी कि जिस प्रकार से आप लोग मेरा जन्मदिवस मना रहे हैं उससे मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है जो आनन्द प्रवाहित हो रहा है उसकी अभिव्यक्ति करने की विधि मैं नहीं जानती।

वास्तव में मैं नहीं जानती कि मैंने आप लोगों के लिए क्या किया है कि आप इतने उत्साह एवं प्रेम से इस कार्य के लिए आगे आए हैं। अपने विशाल हृदय के कारण ही आप मेरे छोटे से कार्य की सराहना कर रहे हैं। पूरे विश्व में सहजयोग फैल गया है और अभी भी आग की तरह से फैल रहा है। इससे पता चलता है कि यह विश्व की आवश्यकता थी। लोगों को इसकी जरूरत थी। यही कारण है कि इतने उत्साह पूर्वक लोगों ने इसे अपनाया है। भारत जैसे देश की बात तो मुझे समझ में आती है जहां आत्म– साक्षात्कार की बात कही गई परन्तु जिन देशों में उच्च आध्यात्मिक चेतना का ज्ञान नहीं है उन देशों में भी आप लोग महान आशीर्वाद मानकर सहजयोग को समझें, सराहना करें और उसका आनन्द लें, ये बात मेरी समझ में नहीं आती! मैं सोचती हूँ कि ये विशेष समय है जिसमें आप प्रेम एवं प्रकाश के जाल में फंस गए। स्वयं मुझे भी विश्वास नहीं था कि जिस प्रेम का आनन्द अपने अन्तस में लिया जा सकता है उसे आप समझेंगे। आध्यात्मिक सूझ–बूझ क्या है? मैं नहीं जानती थी कि किस प्रकार आप अपनी आत्मा को समझेंगे और इसका आनन्द लेंगे! इसका अर्थ ये हुआ कि आप सबमें इस महान प्रेम तथा आध्यात्मिक जागृति की योग्यता है। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। किस प्रकार यह इतनी सुन्दरता पूर्वक कार्यान्वित हुआ? ये अत्यन्त आश्चर्य की बात है? जिस प्रकार से आपको आध्यात्मिक शक्तियां प्राप्त हुई हैं और जिस प्रकार आप इनका उपयोग कर रहे हैं ये

वास्तव में मानवीय समझ से परे की बात है। यही कारण है कि लोगों को विश्वास नहीं होता कि सहजयोग जैसी भी कोई चीज है तथा मानव में अन्तर्जात एक शाश्वत शक्ति है जिसे जागृत किया जा सकता है। यह मानव की सोच से परे की बात है कि वह अपने अन्दर इस प्रकार की आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। न जाने आपमें से भी कितने लोग इस बात को महसूस करते होंगे कि आपने जो प्राप्त किया है वह महान उपलब्धि है। मानव विकास, मानव उत्थान और सभी प्रकार की उन्नति जो हमने की है यह उन सबकी पराकाष्ठा है। निश्चित रूप से यह विश्व को तथा मानव की सूझ–बूझ को परिवर्तित कर देगा।

आज जबकि इराक का युद्ध जोरों पर चल रहा है। मैं आपसे बात कर रही हूँ। मैं नहीं जानती कि क्या कहा जाए, किस प्रकार ये कार्यान्वित होगा। परन्तु आप सबके शान्ति प्रयत्नों से इसका समाधान हो जाएगा और सर्वत्र शान्ति स्थापित हो जाएगी। इस बात का मुझे विश्वास है। हमें युद्ध नहीं चाहिए, हमें तो मानव का हृदय परिवर्तित करना है अन्यथा उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। आप सबके सम्मुख ये बहुत बड़ी चुनौती है। सबको आत्मसाक्षात्कार देने के इरादे को पूर्ण करने के लिए आपको कठोर परिश्रम करना होगा। केवल भाषण देकर या लोगों को भयभीत करके आप उन्हें रोक नहीं सकते। आन्तरिक जागृति आवश्यक है। मैं नहीं जानती कि कितने लोग इसे लेने का प्रयत्न करेंगे, परन्तु जितने भी ले सकें उन्हें जागृति देने का प्रयत्न करें। वो सब भी मानव हैं जिन्होंने इस समय जन्म लिया है। अतः वो भी इसके अधिकारी हैं। आप उनसे मिलने का, बातचीत करने का और आत्मसाक्षात्कार देने का प्रयत्न करें। ये ज्यादा कठिन कार्य नहीं है। आप सभी इस कार्य को कर सकते हैं। प्रत्येक सहजयोगी यदि दस पन्द्रह लोगों को भी आत्म–साक्षात्कार दे तो पूरा विश्व परिवर्तित हो जाएगा। यही हमारी अभिलाषा है कि विश्व की सूझ–बूझ को नई शैली में परिवर्तित कर दें, कि मानव रूप में हमें शान्ति पूर्वक रहना है। बिना रंग और राष्ट्र के भेदभाव के हमें मानव की तरह से मिलकर रहना है। मानव और पशु में केवल यही अन्तर है। जब तक हम आध्यात्मिक नहीं हैं तब तक तो ठीक है परन्तु आप यदि लोगों को आध्यात्मिक बना सकें तो मुझे पूरा विश्वास है सभी कुछ परिवर्तित हो जाएगा। जैसा हमने देखा है कि सहजयोग में अब सहजयोगियों को लड़ने झगड़ने की आवश्यकता नहीं है। परस्पर वे अत्यन्त ही शान्त एवं भद्र हैं।

अतः आज हमें प्रार्थना करनी है कि सहजयोग पूरे विश्व में फैले और विश्व का हर मानव आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करे। आपको वचन देना होगा कि पथ–भ्रष्ट मानव को परिवर्तित करने के लिए आप सभी कुछ करने का प्रयत्न करेंगे। मुझे विश्वास है कि एक बार जब ये कार्यान्वित होने लगेगा तो सभी लोग सहजयोगियों के रूप में शान्ति मय जीवन के मूल्य को समझेंगे।

हमें गहन कार्य करना होगा क्योंकि मानव को इसकी आवश्यकता है। आज इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। उचित समय पर अब हम सहयजोग करने के लिए, जहां तक सम्भव हो और जहां पर भी आवश्यकता हो सर्वत्र इसे फैलाने के लिए तैयार हैं।

निःसन्देह ये कार्यान्वित होगा और वैसे भी जरूरत हो या न हो, जब मानव में उत्थान की इच्छा होगी, मानवीय असफलताओं से ऊपर उठने की इच्छा होगी तो ये कार्य होगा।

मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देती हूँ, अनन्त आशीर्वाद देती हूँ कि सहजयोग का प्रचार करने एवं आत्मसाक्षात्कार देने के अपने कार्य को आप करते रहें। आपको शक्तियां प्राप्त हैं, इस बात को आप जानते हैं। केवल इन शक्तियों का उपयोग करें और लोगों को आत्म साक्षात्कार दें। मेरे जन्मदिवस पर यह एक वचन आपको देना होगा।

आप सबको धन्यवाद।

हिन्दी प्रवचन :

आज मैंने अंग्रेजी में इन लोगों को बताया और आपको बताने की ज़रूरत नहीं क्योंकि इस देश में तो सब लोग जानते ही हैं कि आध्यात्मिक जीवन कितना महत्वपूर्ण है और लोग चाहते हैं कि आध्यात्म में उत्थान हो। बहुत लोग प्रयत्नशील हैं। कोई हिमालय में जाते हैं तो कोई समुद्र के पास जा कर बैठते हैं। घंटों मेहनत करते हैं, उपवास करते हैं। ये सब करने की जरूरत नहीं है। सहजयोग में आते ही वो पार हो सकते हैं और उनको आशीर्वाद मिल सकता है। लोगों को समझाओ कि सर के बल खड़े होने की कोई जरूरत नहीं। आपकी झोली में ही सहजयोग आ सकता है। वो विश्वास भी नहीं करेंगे, शुरु में, कि यह इतना सहज और सुगम है! पर जब वो देखेंगे कि एक के बाद एक, हज़ारों लोग इस देश में सहजयोग में आ गए हैं। और मैं चाहती हूं कि इस देश में सहजयोग बहुत फैलना चाहिए। हमारे प्रश्न, इस देश में बहुत छोटे और ओछे हैं। उनके लिए सहजयोग में एकबार पार हो जाना ही ज़रूरी है बाद में कुछ करने की जरूरत नहीं। तो अगर यहां के लोग भी, हिन्दुस्तान के, प्रयत्न करें तो बहुत आसानी से वो सहजयोग करवा सकते हैं और लोगों को पार करवा सकते हैं। इस लिए आप सबको मेरा अनन्त आशीर्वाद है कि आपसे, एक एक आदमी से, कम से कम सौ–सौ आदमी पार हो जाएं। ऐसी कोई लोक–संख्या बढ़ी नहीं, ऐसी कोई हमारी अवगढ़ स्थिति नहीं है। बहुत सहज सरल बात है और सहज सरल बात ये है कि समझना चाहिए कि अपने देश में सबसे सहज सरल बात जो है वो सहजयोग है और इसके लिए सब लोग तैयार हैं। आप कहीं भी जाएं, कोई देहात में जाएं, शहर में जाएं, हर जगह सहजयोग के लिए उपयुक्त है। इसलिए मैं चाहती हूँ कि आप लोग और पूरी तरह से कोशिश करें और अगले साल आज से भी दुगुने लोग यहाँ आ जाएं।

जो आपने मेरा आदर सत्कार किया उसके लिए मैं बहुत आप से धन्यवाद कहती हूँ। लेकिन जैसे कि मैंने चाहा, आप लोग एक–एक आदमी सौ–सौ लोगों को पार कराइए, बस इस से ज्यादा कुछ नहीं। कोशिश करिए। एक गर निष्ठा हो तो हमारा वादा रहा कि आप बहुत ही सहज और सरल तरीके से सौ आदमियों को पार करा सकते हैं साल में।

सबको अनन्त आशीर्वाद, अनन्त आशीर्वाद। ये कार्य हो सकता है, जिनको ये भाषा नहीं आती वो भी ये कार्य कर रहे हैं, तो आप के लिए क्या मुश्किल है? आप के लिए तो सब पृष्ठ भूमि तैयार है। साधु–सन्तों ने महन्तों ने बहुत कार्य किया है इस देश में। इतना तो किसी भी देश में नहीं हुआ था। इसलिए सिर्फ सोचिए कि हिन्दुस्तानी होने के नांते आप कितना ज्यादा उत्तरदायित्व रखते हैं और कितना ज्यादा आप इसको कर सकते हैं? आप सबको मेरा हृदय से अनन्त आशीर्वाद कि आप लोग सफलीभूत हो जाएं। इस निश्चय में आप सफलीभूत हो जाएं। ये मेरा आशीर्वाद हृदय से है। हार्दिक है। और आशा है कि आप इस आशीर्वाद को पूरी तरह से आत्मसात करेंगे। और लोगों को जैसे भी हो सके जागृति पर जागृति देंगे।

मकर संक्रान्ति पूजा – संदेश

मुम्बई, 14.1.03

14 जनवरी, 2003 को हम (लगभग बीस सहजयोगी) श्री माताजी की बड़ी बेटी के घर पर मकर संक्रान्ति पूजा के लिए एकत्र हुए. हमने घर की बैठक को सजाना शुरु किया और दो घण्टों के पश्चात् कोई भी उसे पहचान न सकता था। हमारे पास फूल, फल और सब्जियां थी। (क्योंकि इसे शाकम्बरी देवी पूजा भी कहते हैं) तथा हमने बाहर से एक खाना बनाने वाले का भी प्रबन्ध किया था।

सायं 7.45 बजे श्रीमाताजी पधारीं। वे वास्तव में देवी की तरह से स्वस्थ एवं मनमोहक लग रहीं थी। उन्होंने सूर्य मार्ग के विषय में बताया तथा ये भी कि किस प्रकार हम सूर्य की पूजा करें और किस प्रकार से ग्रीष्म ऋतु में सूर्य हमारी रक्षा करता है। कृषि–प्रधान देश होने के कारण भारत सूर्य पर अत्यन्त निर्भर है। सूर्य मार्ग में बाधा होने के कारण किस प्रकार से हम लोग आक्रामक हो उठते हैं। संतुलित रहने का प्रयत्न करें और सूर्य देव से प्रार्थना करें कि वो आपको शान्त रहने में आपकी सहायता करें। श्रीमाताजी ने ये भी बताया कि मकर संक्रान्ति का दिन सूर्य पर आधारित है। इसकी तिथि कभी परिवर्तित नहीं होती। हर वर्ष यह चौदह जनवरी को ही मनाया जाता है। सब्जियाँ उगाने के लिए किसानों को वर्षा–सृष्टि करने वाले सूर्य देव पर निर्भर करना पड़ता है। अतः सूर्य की पूजा करते हुए उनसे शीतलता की प्रार्थना करते रहना सर्वोत्तम है।

इसके पश्चात् श्रीमाताजी ने हमें आरती करने के लिए कहा और पूछा कि क्या यहाँ हरमोनियम उपलब्ध है (हमारे लिए अत्यन्त अटपटी स्थिति) बाद में श्रीमाताजी ने कहा कि हममें से किसी का कोई प्रश्न तो नहीं है, किसी का कोई प्रश्न न था। अत्यन्त सुन्दर छोटी सी पूजा हुई और प्रसाद के पश्चात श्रीमाताजी ने हमें रात्रि भोज के लिए कहा। जब तक हम सब लोगों ने भोजन नहीं कर लिया श्रीमाताजी वहीं प्रतीक्षा करती रहीं। तत्पश्चात् श्रीमाताजी के चहुँ ओर बैठकर 15–20 मिनट तक महाराष्ट्र सरकार, स्थानीय मामलों पर बातचीत करते रहे। (क्योंकि आज ही महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री परिवर्तन हुआ था) घर को साफ सुथरा करके रात साढ़े दस बजे संक्रान्ति पूजा का आनन्द लेकर हम वहां से लौटे।

प्रेमपूर्वक एस्टोनिया से

एस्टोनिया बाल्टिक सागर (Baltic Sea) के बंदरगाह पर स्थित है। यह अत्यन्त सुन्दर छोटा सा देश है। रूस, लातीविया और फिनलैण्ड हमारे पड़ोसी देश हैं। हमारा इतिहास जर्मनी, डेनमार्क, स्वीडन और रूस से जुड़ा हुआ है। इन सभी देशों में एस्टोनिया के वास्तुशिल्प, कला तथा लोगों की आत्मा पर भी कुछ चिन्ह छोड़े हैं।

अन्य लोगों से सम्बन्धों में एस्टोनिया के लोग खुले हृदय के नहीं हैं। वे किसी को भी अपने दिल दिमाग में स्थान नहीं देते। अपने ही फार्म पर अपने परिवार के साथ वे अकेले रहना पसन्द करते हैं। एस्टोनिया के लोगों की ये विशेष तस्वीर है। एस्टोनिया की भाषा संगीत की तरह से अत्यन्त मधुर है। एस्टोनिया का संगीत हमारी प्रकृति की तरह से है–सागर और वायु का मिश्रण, यद्यपि एस्टोनिया के भजन ऐसे नहीं है। एस्टोनिया की जनसंख्या 13 लाख है जिनमें से 70% गैर इसाई लोग हैं। अधिकतर लोग राजधानी टेलिन (Tallinn)में रहते हैं। परन्तु सहजयोगी वहां नहीं रहते। नव्वे के दशक के आरम्भ में परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी अपने पति सर सी.पी. के साथ फिनलैण्ड से रूस जाते हुए टेलिन मार्ग से गई। वर्ष 1992 में फिनलैण्ड और एस्टोनिया के लोगों ने मिलकर के टेलिन में एक जन कार्यक्रम किया परन्तु इससे भी सहजयोग भली–भांति आरम्भ न हो पाया। भिन्न नगरों में कुछ गिने–चुने आत्मसाक्षात्कारी लोग थे।

वर्ष 1993 में पारनू (Parnu) और कोहटला (Kohtla Jarve) जार्वे में सहजयोग बढ़ने लगा। अब सहजयोग छः नगरों में फैल गया है – पारनू, नार्वा, कोहटला, जार्वे, जोहवी तथा टेलिन।

अगस्त 2001 में हमारे यहां राष्ट्रपति का चुनाव हुआ। चुनावों से पहले सभी सहजयोगियों ने मिलकर एस्टोनिया में एक हवन किया और श्रीमाताजी से प्रार्थना की कि हमें एक धार्मिक राष्ट्रपति प्रदान करें। चुनावों के दो दौरों में किसी भी उम्मीदवार को बहुमत न प्राप्त हुआ। विशेषज्ञ कहने लगे एस्टोनिया को अगले पांच वर्ष बिना राष्ट्रपति के रहना पड़ेगा। पर आखिरकार अरनोल्ड रंटल (Arnold Runtel) को चुना गया। उनके नाम का अनुवाद करें तो इसका अर्थ है शूरवीर (Knight)। उनके चुने जाने की कोई संभावना न थी। किसी को भी आशा न थी कि वे राष्ट्रपति बन जाएंगे। परन्तु सभी उम्मीदवारों में केवल वही धार्मिक व्यक्ति थे। वक्त बताएगा कि कितना सही व्यक्ति चुना गया।

परम चैतन्य ने यहां किस प्रकार कार्य किया इसके बहुत से उदाहरण हैं। हम तो इस कार्य का आनन्द ही लेते रहते हैं। नवंबर में हमने टेलिन, जोबी, नार्वा, पारनू, कुण्डा (Kunda) और सिंधि में जन कार्यक्रम किए।

प्रेम पूर्वक

एस्टोनिया की सहजयोग सामूहिकता की ओर से।